दीपावली पूजन विधि

सामग्री– अष्ट द्रव्य, थाली, दीपक, मंगल कलश, सरसों, लाल कपड़ा, मौली, श्रीफल, जिनवाणी, चौकी, पाटा 2 कुमकुम, केशर घिसी हुई, नई बहियाँ, कलम दवात।

विधि– सायंकाल को उत्तम गोधूलि बेला में अर्थात् दिन रहते ही अपनी दुकान या मकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पूजा प्रारंभ कर पूर्ण करें ।

एक पाटे पर अष्टद्रव्य थाली, दूसरे पाटे पर खाली थाली में चावलों से स्वस्तिक बनाकर उस पर एक जिनवाणी, दाहिनी ओर घी का दीपक, बांई ओर धूपदान, मध्य में मंगल कलश रखना चाहिए। एक पाटे पर चावलों से स्वस्तिक बनाकर द्रव्य चढ़ाने को रख लेना चाहिए। पूजा गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया द्वारा की जानी चाहिए।

दीपावली पूजन के शुभ समय

दीपावली 21 अक्टूबर 2025, मंगलवार

प्रातः निर्वाण लाड़ू

पूजन के शुभ मुहूर्त

वृश्चिक लग्न प्रातः 8/27 से 10/43 तक। कुंभ लग्न दो. 14/35 से 16/08 तक। वृषभ लग्नः सांय 19/19 से 21/18 तक। शुभ होरा के समय– शुक्र की होरा प्रातः 08/21 से 09/18 तक। बुध की होरा– प्रातः. 09/18 से 10/16 तक। चन्द्र की होरा– प्रातः. 10/16 से 11/14 तक । गुरु ही होरा दोप. 12/11 से 13/09 तक चन्द्र ही होरा सांय 16/59 से 17/56 बजे तक।

शुभ चौघड़िया–

लाभ– प्रातः 10/45 से 12/11 बजे तक।
अमृत – दोपः 12/11 से 13/37 तक।

नोट– उपर्युक्त शुभ समयों में राहु काल प्रातः 10/45 से 16/30 तक के समय को टालकर अपनी सुविधानुसार दीपावली पूजन करें। सभी समय इन्दौर के सूर्योदय के अनुसार दिये गये है।

पूजा प्रारम्भ

मङ्गलं भगवान वीरो, मङ्गलं गौतमों गणी। मङ्गलं कुन्द–कुन्दाद्यो जैन धर्मोस्तु मङ्गलम्। यह मंत्र पढ़कर पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का तिलक करें।

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते रक्ष–रक्ष हूँ फट् स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर सभी के दाहिने हाथ में मौली बांध दें। निम्न मंत्र पढ़कर सभी लोग अपने ऊपर थोड़ा सा जल छिड़क लें।

मंत्र– ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत–वर्षाणिअमृतं स्रावय–स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं इवीं इवीं हं सः स्वाहा। (इसके बाद मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्प छिड़कते जायें)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकः श्रीसिद्धांत सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधका : पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम्।

मंगल कलश स्थापनां मंत्र

ॐ ह्रीं श्री मज्जिन शासने भगवतो महतिमहावीर वर्द्धमान तीर्थकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूल संघे मध्यलोके भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेश...प्रदेशे श्री मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं क्ष्वीं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना मंत्र

रुचिर दीप्ति करं शुभ दीपकं, सकल लोक सुखाकर मुज्जवलं।
तिमिर जाल हरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलम् मुदा।
ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं स्थापयामि।

पूजा प्रारंभ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादि महामूल मंत्रेभ्यो नमः

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णतो धम्मो मंगलं।

चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमों। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्म शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमो अर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत)

इसके पश्चात् निम्नलिखित अर्घ चढ़ाये–

देव शास्त्र गुरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर, वर्तमान चौबीसी, आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शांतिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी का अर्घ चढ़ाकर गौतम स्वामी एवं सरस्वती पूजन करके शांतिपाठ पूर्वक विसर्जन करें ।

नवीन बही मुहूर्त

सभी अर्घ चढ़ाने के बाद बहियों पर स्वस्तिक बनायें। जैसा नीचे बना है श्री का पर्वताकार लिखें।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री

नई बही के पहले पेज पर सबसे ऊपर लिखें–

श्री ऋषभाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतमगणधराय नमः, श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै लक्ष्म्यै नमः, श्री वर्द्धताम् लिखें फिर श्री का पर्वताकार लेखन करें। पश्चात श्री वर्द्धमानाय नमः मम सर्व सिद्धिर्भवतु धनं वर्धताम् पढ़कर अर्घ चढ़ावें। इसके बाद मंगल कलश चौकी रखकर उसमें श्री लीलायतनं महीकुल ग्रहं कीर्ति प्रमोदास्पदं वाग्देवीरति केतनं जय रमा क्रीडाविधानं महत्। सः स्यात्व सर्वमहोत्सवैक भवनं यः प्रार्थितार्थ प्रदं, प्रातः पश्चयति कल्पपादच्छायां जिनांघ्रिद्वयम्॥

श्लोक पढ़कर सांथिया बनायें।

पूजनोपरान्त सोलहकारण भावना के प्रतीक सोलह दीपकों में 64 ऋद्धियों के प्रतीक 64 बाती जलाकर महावीराष्टक पढ़ें, आरती करें तथा दीपकों को मन्दिर जी, गृहद्वार, रसोईघर एवं सभी कमरों में रखें। आस पास रहने वाले व्यक्तियों के यहाँ भी दीपक भेज सकते हैं। दीपकों में शुद्ध देशी घी का ही उपयोग करना चाहिये। घी की अनुपलब्धता में शुद्ध तेल का उपयोग भी कर सकते हैं। पूजनोपरान्त पूजन स्थल से अलग–अलग स्थान में अतिथियों को (दिन में ही) अल्पाहार करा सकते हैं। गृह के मुख्य द्वार पर वन्दनवार बाँधकर द्वार के ऊपर ॐ एवं श्री महावीराय नमः तथा द्वार के दोनों ओर शुभ–लाभ अंकित करें।

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
11.01.25	उ.षा.	02/30
24.01.25	श्रवण	04/52
06.02.25	धनिष्ठा	07/57
19.02.25	शतभिषा	12/34
04.03.25	पूर्वा भाद्रपद	18/48
18.03.25	उत्तराभाद्रपद	03/20
31.04.25	रेवती	14/08
14.04.25	अश्विनी	03/30
27.04.25	भरणी	19/19
11.05.25	कृत्तिका	13/26
25.05.25	रोहिणी	09/40
08.06.25	मृगशिरा	07/26
22.06.25	आर्द्रा	06/28
06.07.25	पुनर्वसु	05/55
20.07.25	पुष्य	05/30
03.08.25	आश्लेषा	04/16
17.08.25	मघा	02/00
30.08.25	पूर्वा फाल्गुनी	21/52
13.09.25	उत्तराफाल्गुनी	15/48
27.09.25	हस्त	07/14
10.10.25	चित्रा	20/19
24.10.25	स्वाती	06/48
06.11.25	विशाखा	14/59
19.11.25	अनुराधा	21/03
03.12.25	ज्येष्ठा	01/21
16.12.25	मूल	04/26
29.12.25	पूर्वाषाढ़	06/37

सूर्य राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
14.01.25	मकर	09/03
12.02.25	कुंभ	22/03
14.03.25	मीन	18/58
13.04.25	मेष	27/30
14.05.25	वृष	24/20
15.06.25	मिथुन	06/52
16.07.25	कर्क	17/40
16.08.25	सिंह	26/00
16.09.25	कन्या	25/54
17.10.25	तुला	13/53
16.11.25	वृश्चिक	13/44
15.12.25	धनु	28/26

मंगल राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
21/01/25	मिथुन	9/37
02/04/25	कर्क	25/56
06/06/25	सिंह	26/28
28/07/25	कन्या	20/11
13/09/25	तुला	21/34
27/10/25	वृश्चिक	15/53
27/12/25	धनु	20/27

बुध राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
04/01/25	धनु	12/11
24/01/25	मकर	17/45
11/02/25	कुंभ	12/58
27/02/25	मीन	23/46
06/05/25	मेष	28/13
23/05/25	वृष	13/05
06/06/25	मिथुन	09/29
22/06/25	कर्क	21/33
30/08/25	सिंह	16/48
15/09/25	कन्या	11/10
02/10/25	तुला	27/47
24/10/25	वृश्चिक	12/39
23/11/25	तुला	19/58
06/12/25	वृश्चिक	20/52
29/12/25	धनु	07/27

गुरु राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
01/05/25	मिथुन	23/20
18/10/25	कर्क	29/39
05/12/25	मिथुन	15/38

शुक्र राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
28.01.25	मीन	07/12
31.05.25	मेष	11/42
29.06.25	वृष	14/17
26.07.25	मिथुन	09/02
20.08.25	कर्क	25/25
14.09.25	सिंह	24/23
09.10.25	कन्या	10/55
02.11.25	तुला	13/21
26.11.25	वृश्चिक	11/27
20.12.25	धनु	07/50

शनि राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
29/03/25	मीन	23/01

राहू राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
18/05/25	कुम्भ	16/30

केतु राशि प्रवेश

तारीख	राशि	घ.मि.
18/05/25	सिंह	16/30

रवि–पुष्य योग

- 09 मार्च 23/55 से 30/40 बजे तक ।
- 6 अप्रैल 06/15 से मार्च 06/14 बजे तक।
- 4 मई 05/52 से 12/53 बजे तक ।
- 7 दिस. 28/11 बजे से 30/55 बजे तक।

गुरु–पुष्य योग

- 24 जुलाई 16/43 बजे से 29/55 बजे तक।
- 21 अगस्त 06/06 बजे से 24/08 बजे तक।
- 18 सितम्बर 06/14 बजे से 06/32 बजे तक।

गुरु–उदय अस्त

- 13 जून शुक्रवार 19/46 बजे से 9 जुलाई, बुधवार 05/03 बजे तक गुरु अस्त रहेंगे ।
- कुल अस्त अवधि 27 दिन।

शुक्र– उदय अस्त

- 19 मार्च 2025, बुधवार 19/00 बजे से 23 मार्च 2025, रविवार 06/03 बजे तक शुक्र त ारा अस्त रहेगा।
- 12 दिस. 2025, शुक्रवार 06/31 बजे से 31 जन. 2025, शनिवार 18/39 बते तक शुक्र तारा अस्त रहेगा।
- कुल अस्त अवधि 50 दिन।

संपूर्ण कार्य सिद्धि के लिये होरा मूहुर्त

यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किं चित्प्रकीर्तिकम्। तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते ॥1॥

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र में पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना गया है। सात ग्रहों की सात ही होरा होती हैं, जो दिन–रात चौबीस घंटों में घूमकर मनुष्य को कार्यसिद्धि के लिये अशुभ समय में भी सुखमय श्रेष्ठ समय प्रदान करती है। प्रत्येक वार को एक घंटे की सूर्योदय के समय में उसी वार की पहली होरा होती है। इसके बाद एक घंटे की दूसरी होरा उस बार से छठे वार की होती है। इसी प्रकार दूसरे होरा के वार से छठे होरा की तीसरी घंटे की होरा होती है। इसी क्रम में 24 घंटों में 24 होरा व्यतीत होने पर अगले बार के सूर्यो दय के साथ उसी वार की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी अर्थात् एक घंटा होता है। प्रत्येक घंटे पर होरा बदल जाती है। जैसा कि हमने बताया कि सात ग्रहों की सात होरा होती हैं। कौन से ग्रह की होरा में कौन–सा कार्य श्रेष्ठ होता है, इसके लिये हम ज्योतिष प्रेमियों की जानकारी हेतु प्रत्येक ग्रह की होरा के कार्य नीचे लिख रहे हैं ।

1. सूर्य की होरा– टेण्डर भरने, देने व राजकार्य के चार्ज लेने–देने के लिये श्रेष्ठ होती है। 2. चन्द्र ही होरा–सभी कार्यों हेतु श्रेष्ठ होती है। 3. मंगल की होरा–युद्ध, द्यूत, सभा सोसायटी में जाना, कर्ज देना व न्यायालय के कार्यों के लिये उत्तम होती है। 4. बुध की होरा– नवीन व्यापार करना, नवीन लेख व पुस्तक प्रकाशन, विद्या का आरंभ, कोष संग्रह एवं प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कार्यों के लिये श्रेष्ठ होती है। 5. गुरु की होरा– उच्चाधिकारियों से मिलन, विवाह संबंधी कार्यक्रम, नवीन काव्य लेखन व प्रकाशन, कोष संग्रह आदि अनेक शुभ कार्यों तथा यात्रा हेतु उत्तम होती है। 6. शुक्र की होरा– नवीन वस्त्र व आभूषण धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य एवं चलचित्र शूटिंग कार्य तथा यात्रा हेतु श्रेष्ठ होती है। 7. शनि की होरा– नूतन गृहारंभ–भूमि क्रय, मशीनरी मिल्स शुभारंभ, द्रव्य संग्रह, महान नींव आदि स्थिर कार्यों तथा यात्रा हेतु उत्तम होती है।

नोट– यहाँ ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राशि स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा, विवाहादि शुभ कार्यों का त्याग करना चाहिए अन्यथा अशुभ फल मिल सकता है। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ करना सिद्धिदायक होता है।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क
1 घं. 39 मि	1 घं. 58 मि	2 घं. 13 मि	2 घं. 17 मि
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
2 घं. 12 मि	2 घं. 10 मि	2 घं. 15 मि	2 घं. 16 मि
धनु	मकर	कुम्भ	मीन
2 घं. 06 मि	1 घं. 47 मि	1 घं. 33 मि	1 घं. 30 मि

- दूध ना पचे तो -सोंफ
- दही ना पचे तो- सोंठ
- छांछ ना पचे तो- जीरा व काली मिर्च
- अरबी व मूली न चे तो- अजवायन
- कड़ी ना पचे तो- कड़ी पत्ता
- तेल, घी, ना पचे तो- कलौंजी
- पनीर ना पचे तो- भुना जीरा
- भोजन ना पचे तो- गर्म जल
- केला ना पचे तो- इलायची

1. वृश्चिक लग्नः दीपावली के दिन, वृश्चिक लग्न प्रातः काल में प्रचलित रहता है। इस लग्न में पूजा मन्दिर, अस्पताल, होटल, विद्यालय व महाविद्यालय में की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त, जो व्यक्ति शासकीय सेवा व राजनीति से जुड़े हैं, टेलीविजन या फिल्म कलाकार, प्रस्तोता हैं व बीमा के क्षेत्र में कार्यरत लोगो को भी वृश्चिक लग्न में पूजा विशेषतः करनी चाहिये।

2. कुम्भ लग्नः दीपावली के दिन, कुम्भ लग्न मध्यान्ह या दोपहर में प्रचलित रहता है। जो व्यक्ति बीमार या रोगग्रस्त है, जिनके ऊपर कर्ज है, जो शनि की दशा में बुरे प्रभाव से मुक्त होना चाहते हैं व जिन्हें व्यापार में अत्यधिक नुकसान व ऋण हो गया है उन सभी लोगों को पूजा कुम्भ लग्न में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति हेतु करनी चाहिये।

3. वृषभ लग्नः दीपावली के दिन, वृषभ लग्न सांयकाल में प्रचलित रहता है। गृहस्थ लोगों, विवाहित, जिनके बच्चे हैं, मध्यमवर्गीय निम्न– मध्यमवर्गीय, ग्रामीण, किसान, नौकरीपशा व वेतन भोगी और व्यापारियों के लिये लक्ष्मी पूजा वृषभ लग्न में श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होती है। दीवाली के दिन पूजा के लिये वृषभ लग्न मुहूर्त को सबसे श्रेष्ठ माना गया है।

4. सिंह लग्नः दीपावली के दिन, सिंह लग्न मध्य रात्रि के समय प्रचलित रहता है। सन्यासी संत, तान्त्रिक व जिन्होंने गृहस्थ जीवन त्याग दिया है उन्हें पूजा सिंह लग्न में करना उपर्युक्त रहेगा।

इन्दौर से रेखान्तर संस्कार-मिनिट और अक्षांश

गाँव/शहर	प्रान्त	रेखांतर	अक्षांश	रेखांश
अकोला	महाराष्ट	-5	20/42	77/02
अजमेर	राजस्थान	+5	26/27	74/40
अमरावती	महाराष्ट	-8	20/56	77/55
अम्बाला	हरियाणा	-4	30/22	76/46
अम्बिकापुर	म.प्र.	-25	23/10	82/05
अमृतसर	पंजाब	+4	31/38	74/53
अयोध्या	उ.प्र.	-25	26/48	82/14
अलीगढ़	उ.प्र.	-9	27/54	78/6
अहमदाबाद	गुजरात	+12	23/02	72/37
आगरा	उ.प्र.	-9	27/11	78/02
आरा	बिहार	-35	25/36	84/42
अलवर	राजस्थान	-3	27/34	76/38
इटारसी	म.प्र.	-4	23/37	77/46
इन्द्रवती	तमिलनाडू	-20	19/00	81/00
इलाहाबाद	उ.प्र.	-24	25/28	81/52
इम्फाल	मणिपुर	-70	24/54	93/54
इटानगर		-71	26/54	93/37
इन्दौर	मध्यप्रदेश	00	22/43	75/52
उड़ीसा	भारत	-38	21/17	85/30
उज्जैन	म.प्र.	+1	23/11	75/44
उदयपुर	राजस्थान	+9	24/35	73/42
उस्मानाबाद	महाराष्ट	-1	18/08	76/05
उरई	उ.प्र.	-14	25/59	79/30
एलोरा	महाराष्ट	-21	16/48	81/08
औरंगाबाद	महाराष्ट	+2	19/52	75/09
कटनी	म.प्र.	-18	22/40	80/25
कर्नाटक	भारत	-12	12/00	79/00
कलकत्ता	पं. बंगाल	-50	22/35	88/24
कानपुर	उ.प्र.	-18	26/37	80/21
किशनगढ़	राजस्थान	+4	27/52	70/34
कोल्हापुर	महाराष्ट	+6	16/41	74/13
कोटा	गुजरात	00	25/11	75/50
खण्डवा	म.प्र.	-2	21/50	76/20
खनियाधाना	म.प्र.	-9	25/01	78/07
ग्वालियर	म.प्र.	-9	23/14	78/10
गुड़गांव	हरियाणा	-7	28/37	77/40
गुना	म.प्र.	-6	24/40	77/30
गोहाटी	असम	-64	26/11	91/45
गया	बिहार	-36	24/48	85/01
गंगानगर	राजस्थान	+8	20/52	73/51
चण्डीगढ़	पंजाब	-4	30/40	76/52
चन्दौसी	उ.प्र.	-12	28/23	78/50
चित्तौड़	राजस्थान	+4	24/54	74/42
छतरपुर	म.प्र.	-4	30/40	76/52
छिंदवाड़ा	म.प्र.	-15	24/55	79/36
जगदलपुर	म.प्र.	-12	22/00	79/00
जबलपुर	म.प्र.	-24	19/00	82/00
जम्मू	कश्मीर	-16	23/10	79/58
जोधपुर	राजस्थान	+4	32/46	74/50
जयपुर	राजस्थान	+11	26/19	73/04
जामनगर	गुजरात	00	26/55	75/50
जूनागढ़	गुजरात	+23	22/27	70/05
झाँसी	उ.प्र.	-11	25/26	78/34
झालावाड़	राजस्थान	-1	24/36	76/09
टीकमगढ़	म.प्र.	-12	24/45	78/53
टोंक .	राजस्थान	00	26/11	75/50
डीमापुर	असम	-72	25/51	93/48
डूंगरपुर	राजस्थान	+9	23/50	73/43
दतिया	म.प्र.	-11	25/39	78/27
दिल्ली	भारत	-5	28/38	74/14
दुर्ग	छत्तीसगढ़	-21	22/15	81/17
देहरादून	उ.प्र.	-9	30/19	78/04

गाँव/शहर	प्रान्त	रेखांतर	अक्षांश	रेखांश
धारवाड़	कर्नाटक	+3	15/28	75/02
धार	मध्यप्रदेश	+3	22/36	75/12
धोलपुर	राजस्थान	-8	26/42	77/53
धुलिया	महाराष्ट	+4	20/53	74/50
नागपुर	महाराष्ट	-13	21/09	79/06
नसीराबाद	राजस्थान	+5	26/08	74/46
नाडियाद	गुजरात	+12	22/41	72/52
नासिक	महाराष्ट	+8	21/00	73/47
नीमच	म.प्र.	+8	24/28	74/51
पटना	बिहार	-37	25/37	85/13
पूना	महाराष्ट	+8	18/31	73/52
पानीपत	हरियाणा	-5	29/27	76/59
प्रतापगढ़	राजस्थान	+5	24/02	74/40
पारसनाथ	झारखण्ड	-41	24/00	86/11
बनारस	उ.प्र.	-28	25/20	86/11
बम्बई	महाराष्ट	+12	18/55	72/50
बरेली	उत्तरप्रदेश	-14	28/22	79/24
बांसवाड़ा	राजस्थान	-10	23/33	78/26
बूँदी	राजस्थान	+1	25/27	75/40
बालाघाट	म.प्र.	00	18/30	76/00
बिलासपुर	छत्तीसगढ़	-25	22/05	82/10
बीकानेर	राजस्थान	+10	28/02	73/22
बीजापुर	महाराष्ट	00	16/50	75/42
बेंगलोर	कर्नाटक	-6	12/58	77/35
ब्यावर	राजस्थान	+6	26/07	73/54
भरतपुर	राजस्थान	-7	27/15	77/30
भागलपुर	बिहार	-45	25/12	87/05
विदिशा	म.प्र.	-8	23/32	77/50
भोपाल	म.प्र.	-7	23/16	77/23
मन्दसौर	म.प्र.	+3	24/15	75/05
मथुरा	उ.प्र.	-8	27/28	77/41
मण्डला	म.प्र.	-18	22/45	80/26
मिर्जापुर	उ.प्र.	-27	25/05	82/38
मुरादाबाद	उ.प्र.	-12	28/50	78/50
मेरठ	उ.प्र.	-7	29/01	77/45
मैनपुरी	उ.प्र.	-13	27/14	79/03
रतलाम	म.प्र.	+4	23/19	75/03
राजकोट	गुजरात	+20	22/18	70/50
राजनंदगांव	छत्तीसगढ.	-20	21/05	81/05
रामटेक	महाराष्ट	-13	21/20	79/15
रायपुर	छत्तीसगढ़	-23	21/15	81/38
रांची	झारखंड	-38	23/17	85/24
लखनऊ	उ.प्र.	-20	26/51	80/59
ललितपुर	उ.प्र.	-10	24/41	78/24
शिवपुरी	म.प्र.	-7	25/30	78/04
शोलापुर	महाराष्ट	00	17/40	75/48
सहारनपुर	उ.प्र.	-7	29/59	77/23
सागर	म.प्र.	-11	23/50	78/45
सांगली	महाराष्ट	+5	15/52	74/36
सिवनी	म.प्र.	-15	22/12	72/55
सूरत	गुजरात	+12	21/12	72/55
हरिद्वार	उ.प्र.	-9	29/58	78/13
हासी	हरियाणा	00	29/05	75/55
हिम्मतनगर	गुजरात	+12	23/37	72/57
हैदराबाद	तेलंगाना	+10	17/27	78/30
हिसार	हरियाणा	+1	29/14	75/44
होशंगाबाद	म.प्र.	00	22/46	77/45

नोट- यहाँ 20/42 का अर्थ 20 अंश 42 कला तथा 66/02 का अर्थ 66 अंश 02 कला है। अर्थात नगरों के अक्षांश व रेखांश के अंक दिये गये है। वे अंश और कला है।

सूर्योदय-सूर्यास्त निकालने की सरलतम विधि

किसी भी स्थान का सूर्योदय-सूर्यास्त निकालने की सुगम-सरल विधि जैन ज्योतिष विद्या पंचांग में प्रत्येक महीन के 5-5 दिनों के अंतर से सूर्योदयास्त दिए हुए हैं। इष्ट दिनांक इस पंचाग में नहीं हो तो त्रैराशिक रीति का उपयोग करके सूर्योदयास्त समय निकाले।

यह सूर्योदयास्त इन्दौर के रेखांश 75.52 के अनुसार है। स्टेण्डर्ड टाईम प्रायः समस्त भारत में एक ही होता है। क्योंकि प्रचलित घड़ियाँ एक ही साथ मिलायी जाती हैं, इनमें हर जगह एक ही साथ 12 बजते हैं और एक ही साथ 2 लेकिन अक्षांश और रेखांश प्रत्येक स्थान का अलग-अलग होने से सूर्योदय एवं सूर्यास्त में अन्तर आता है। इस अन्तर को जानने के लिए इन्दौर के रेखांश 75.52 है से जिस स्थान का सूर्योदयास्त जानना हो वहाँ के रेखांश को इन्दौर के रेखांश में एक अंश अन्तर के 4 मिनिट के हिसाब से इन्दौर के समय में धन+अथवा ऋण-इन्दौर के रेखांश से इष्ट स्थान का रेखांश अधिक हो तो -ऋण और कम हो तो धन+कर देने से इष्ट स्थान का सूर्योदयास्त समय आ जाता है।

उदाहरण 1 : जनवरी 2025 को जबलपुर का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करना है। जैन ज्योतिष विद्या पंचांग में 1 जनवरी को सूर्योदय का समय 7 बजकर 07 मिनिट एवं सूर्यास्त का समय 17.53 लिखा है। अक्षांश और देशांतर बोधक सारिणी में इन्दौर के रेखांश 75.52 एवं जबलपुर के रेखांश 80.00 लिखे। इन्दौर के रेखांश से जबलपुर के रेखांश अधिक है। अन्तर करने पर 80.00-75.52 = 04.08 अन्तर प्राप्त हुआ। एक अंश के हिसाब से 4 मिनट से गुणा करने पर 16 मिनिट प्राप्त हुआ चूँकि जबलपुर का रेखांश इन्दौर के रेखांश से अधिक होने के कारण इन्दौर के सूर्योदय 7.07 में से 16 मिनिट ऋण करने पर 6.51 जबलपुर का सूर्योदय एवं इन्दौर के सूर्यास्त 17.53 में 16 मिनिट ऋण करने पर 17.33 जबलपुर का सूर्यास्त का समय होगा।

उदाहरण 2 : 1 जनवरी 2022 को मुंबई का स्टेण्डर्ड सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस दिन इन्दौर का सूर्योदय 7.10 एवं सूर्यास्त 17.53 है। अक्षांश और देशांतर बोधक सारिणी में मुंबई का रेखांश 75.52 है जो कि इन्दौर के रेखांश 75.52 से 2.57 अंश प्राप्त हुए एक अंश के हिसाब से 4 मिनिट से गुणा करने पर 12 मिनिट अन्तर प्राप्त हुआ चूँकि मुंबई का रेखांश इन्दौर के रेखांश से कम होने के कारण इन्दौर के सूर्योदय 7.07 में 12 मिनिट जोड़ने पर मुंबई के सूर्योदय का समय 7.19 एवं इन्दौर के सूर्यास्त 17.53 में 12 मिनिट जोड़ने पर 18.05 मुंबई के सूर्यास्त का समय होगा। उपरोक्त सूर्यादय-सूर्यास्त के समय में 2-3 मिनिट का अंतर हो सकता है।

नोटः अक्षांश और देशांतर बोधक सारिणी भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. नेमीचन्द्र द्वारा लिखित भारतीय ज्योतिषी के पृष्ठ 133 से 139 पर दी गई है। आपकी सुविधा के लिए जैन ज्योतिष विद्या पंचांग में इन्दौर से रेखांतर संस्कार मिनिट और अक्षांश सारिणी दी गई है। जैसे अकोला + 5 लिखा तो आपको इन्दौर के सूर्यास्त - सूर्यास्त के समय में 5 मिनिट जोड़ने में अकोला का सूर्योदयास्त का समय प्राप्त हो जायेगा। इसी प्रकार अन्य स्थानों का सूर्योदयास्त निकाले। यदि रेखांतर सारिणी के इष्ट स्थान का नाम नहीं है तो भारतीय ज्योतिष में देखें एवं अन्तर के लिए इन्दौर के रेखांतर मिनिट संस्कार सारिणी में अंतर ज्ञात करें।

जैसे : रेखांतर सारिणी में इष्ट स्थान का रेखांश 90.52 है जो कि इन्दौर के रेखांश 75.52 से 15.00 अधिक है। अतः 15 अंश को 4 मिनिट से गुणा करने पर 60 मिनिट प्राप्त हुए अतः इन्दौर के सूर्योदय में से 60 मिनिट (1 घंटा) कम करने पर इष्ट स्थान का सूर्योदय प्राप्त होगा।

जैसे : 1 जनवरी 2024 को 7.10 सूर्यादय एवं 17.53 सूर्यास्त का समय है तो इष्ट स्थान जो कि 90.52 रेखांश पर स्थित है। का सूर्योदय 6.07 एवं सूर्यास्त 16.53 पर होगा।

इन्दौर से रेखान्तर मिनिट संस्कार

निम्नांकित मिनिट संस्कार चिन्हानुसार (+) जोडें।							
रेखांश	69	70	71	72	73	74	75
0	+27	+23	+19	+15	+11	+7	+3
I	+26	+22	+18	+14	+10	+6	+2
II	+25	+21	+17	+13	+9	+5	+1
III	+24	+20	+16	+12	+8	+4	00
निम्नांकित मिनिट (-) घटाएं।							
रेखांश	76	77	78	79	80	81	82
0	-1	-5	-9	-13	-17	-21	-25
I	-2	-6	-10	-14	-18	-22	-26
II	-3	-7	-11	-15	-19	-23	-27
III	-4	-8	-12	-16	-20	-24	-28
निम्नांकित मिनिट (-) घटाएं।							
रेखांश	83	87	85	86	87	88	89
0	-29	-33	-37	-41	-45	-49	-53
I	-30	-34	-38	-42	-46	-50	-54
II	-31	-35	-39	-43	-47	-51	-55
III	-32	-36	-40	-44	-48	-52	-56
निम्नांकित मिनिट (-)घटाएं							
रेखांश	90	91	92	93	94	95	96
0	-57	-61	-65	-69	-73	-77	-81
I	-58	-62	-66	-70	-74	-78	-82
II	-59	-63	-67	-71	-75	-79	-83
IIII	-60	-64	-68	-72	-76	-80	-84

सूची में जिन गाँवों/शहरों के नाम नहीं हैं उनके लिए रेखांतर संस्कार निश्चित करने के लिए ऊपर दी हुई सारणी का उपयोग करें। उदाहरण-72II रेखांश के लिए +13 मिनिट, 82 रेखांश के लिए -25 और 95III के लिए -80 मिनिट रेखांतर संस्कार आता है।

कैसे जाने कि कोई तिथि 6 घटी है या नहीं ?

जैन ज्योतिष विद्या पंचाग में प्रत्येक तिथि के उसका समाप्ति समय दिया है जो कि इन्दौर का है। 7 मार्च 2025 फाल्गुन शुक्ल 8/9 का समाप्ति समय 9/18-32/16 लिखा है। अर्थात् 7 तिथि 8 मार्च को 9 बजकर 18 मिनिट तक है एवं 9 तिथि 8 मार्च को 8 बजकर 16 मिनिट तक है। 8 मार्च को इन्दौर का सूर्योदय 06/42 है। सूर्योदय एवं तिथि के समाप्ति समय का अन्तर 1 घंटा 34 मिनिट है। इसमें 2II का गुणा करने से 3 घटी 55 पल हुआ जो कि 6 घटी से कम होने से 7 मार्च को 8/9 को शामिल माना है। अर्थात व्रत के अनुसार 8 एवं 9 दोनों के व्रत 7 मार्च को किये जावेंगे।

किन्तु प्रत्येक स्थान का सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने के कारण इसमें अन्तर पाया जाता है। जैसे इन्दौर में 8 मार्च 2025 को सूर्योदय का समय 06/42 है किन्तु गुवाहाटी (आसाम) में 8 मार्च 2025 को सूर्योदय 5/40 पर हुआ एवं (नवमी) तिथि का समाप्ति समय 08/16 है। दोनों का अन्तर 2 घंटा 36 मिनिट है। इसके घटी पल करने पर 6 घटी 30 पल प्राप्त हुये है। अर्थात् गुवाहाटी में 8 मार्च 2025को (नवमी) तिथी 6 घटी से अधिक होने से पूर्ण मानी जायेगी। अर्थात् इन्दौर में 7 मार्च 8/9 को एक साथ माना जायेगा, तो गुवाहाटी में 8 मार्च को 9/10 एक साथ मानी जावेगी।

आपकी सुविधा के लिये इस बार सभी स्थानों का सूर्योदय निकालने का चार्ट दिया जा रहा है, जिससे आप अपने स्थान का सूर्योदय समय निकालकर यह पता लगा सकते हैं कि कौन सी तिथि किस नक्षत्र में कितने घटी है। यदि कोई तिथि 6 घटी से कम हो तो वह क्षय तिथि मानी जावेगी एवं अमली तिथि पूर्ण मानी जावेगी। जो तिथि वृद्धि होगी उसमें प्रथम तिथि व्रत में ग्रहण की जावेगी

अंग्रेजी तारीख एवं वार का संयोग सभी कार्य में त्याज्य

जनवरी में ता. 1 को मंगलवार, फरवरी में ता. 11 को गुरुवार, मार्च में ता. 13 को रविवार, अप्रैल में ता. 19 को शनिवार, मई में ता. 25 को रविवार, जून में ता. 26 को शनिवार, जुलाई में ता. 7 को बुधवार, अगस्त में ता. 16 को मंगलवार, सितम्बर 27 को गुरुवार, अक्टूबर 6 को शुक्रवार, नवम्बर में ता. 17 को बुधवार, दिसम्बर में ता. 26 को मंगलवार।

ज्ञातव्य- उपरोक्त मास की तारीख में यदि उस वार का संयोग हो जाए तो कोई भी शुभाशुभ कार्य करने में असफल हो जाता है, अतः सर्वथा त्याज्य है।

अंग्रेजी तारीख के अनुसार यात्रा कीजिए

तारीखें -जनवरी से दिसम्बर तक	पूर्व दिशा के लिए	दक्षिण दिशा के लिए	पश्चिम दिशा के लिए	उत्तर दिशा के लिए
1-6-7-16-17-26-27	रविवार	रविवार	सोमवार	रविवार
2-11-12-21-22-31	मंगलवार	सोमवार	मंगलवार	सोमवार
3-10-13-20-23-30	बुधवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार
4-9-14-19-24-29	गुरुवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार
5-8-15-18-25-28	शुक्रवार	शुक्रवार	शनिवार	शनिवार
6-7-16-17-26-27	-	शनिवार	-	-
यात्रा का समय भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम से	दिन में 12 बजे से रात्रि 27 बजे तक	शाम 5 बजे से 12 बजे रात्रि तक	12 बजे रात से सुबह 6 बजे तक	सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक

मुहूर्त

1. ऋण का लेन-देन– मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, हस्तयुक्त रविवार को ऋण नहीं लेवें। मंगल को चुकावें तथा बुधवार को धन नहीं देवें।

2. टक मोटर, इंजन, गाड़ी, विविध यान– हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजीत, रेवती, घनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाति, पुनर्वसु चर लग्न+चर नक्षत्र वार तिथि शुभ।

3. भूमि क्रय-विक्रय मुहूर्त– दोनों पक्षों की 5,6,10,11,15 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा। गुरु तथा शुक्रवार एवं मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा तीनों पूर्वा, मूल रेवती आदि नक्षत्रों में भूमि की खरीदी अथवा बिक्री बेचना कार्य शुभ।

4. पद ग्रहण– राजसेवा मुहूर्त- दोनों पक्षों की तिथि यथा- 2,3,5,7,10,11,13,15 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, (राजपंचक, नृपपंचक दिवस त्याग करके) सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रवार। अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजीत, रेवती नक्षत्र मान्य हैं ।

5. मशीनरी शुभारम्भ मुहूर्त– धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती आदि नक्षत्रों में कल-कारखाना, मशीनरी कार्य प्रारंभ करें, बुधवार विशेष शुभ अन्य वार सामान्य। चर लग्न, चर संज्ञक नक्षत्र की विशेषकर शुभद।

6. वाहन क्रय एवं शुभारम्भ मुहूर्त– अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजीत, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में दोनों पक्षों की 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,13,15 तिथियों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र में खरीदें। भद्रा, दुष्ट योग, निर्बल सूर्य, 4,9,14 रिक्ता एवं अमावस तिथी मंगलवार तथा 4,8,12 चन्द्र एवं घात राशि चन्द्र विशेषतः त्याज्य है।

7. औषधि सेवन मुहूर्त– अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाति, पुनर्वसु और मूल इन नक्षत्रों में द्विस्वभाव लग्नों में और उनके शुक्र, चन्द्र, गुरु एवं बुध के रहने तथा बुध, गुरु, शुक्र चन्द्र और रविवार इन वारों में रिक्ता अमावस आदि रहित शुभ तिथियों में रोगी को प्रथम औषध प्रारम्भ करना शुभ है। किन्तु उस दिन रोगी का जन्म नक्षत्र न हो।

8. सीमन्तोन्नयन मुहूर्त व चक्र– बृहस्पति, रवि और मंगलवार में , मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, और हस्त नक्षत्रों में, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में, मासेश्वर के बल रहते, गर्भाधान से आठवें या छठे मास में, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रहों (1/4/7/10/5/9) के रहते, ग्यारहवें, छठे, तीसरे स्थान में क्रूर ग्रहों के रहते हुए, पुरुषसंज्ञक ग्रहों के लग्न अथवा नवांश में रहने पर सीमन्तोन्नयन कर्म श्रेष्ठ है। किसी-किसी आचार्य के मत से उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, रोहणी और रेवती नक्षत्रों में चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र इन-इन वारों में सीमन्तोन्नयन करना शुभ है। तिथि, नक्षत्र, वार, योग और करण प्रत्येक दिन के प्रत्येक पंचांग में लिखे रहते हैं। अतः देखकर मुहूर्त निकाल लेना चाहिए।

9. पुसंवन मुहूर्त व चक्र– श्रवण, रोहिणी और पुष्प नक्षत्र में, शुभ ग्रहों के दिन में, गर्भाधान से तीसरे मास में, शुभ ग्रहों में दृष्ट, युत वा शुभ ग्रह सम्बन्धि लाभ लग्न में और आठवें स्थान में किसी ग्रह के न रहते, दोपहर के पूर्व पुसंवन करना चाहिए, इसमें सीमन्तोन्नयन के नक्षत्र भी लिये गये हैं ।

10. जातकर्म और नामकरण मुहूर्त– जन्मकाल से 11वें या 12वें दिन में मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा और शतभिशा नक्षत्रों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में 1,2,3,5,6,7,10,11,13 तिथियों में सूर्य संक्रांति, भद्रा संक्रांति , व्यतिपातादि दोषों से रहित, 2,5,8,11 शुभ लग्न से 1,5,7,9,10 स्थानों में शुभ ग्रह 3,6,11 स्थानों में पापग्रह 8,12 स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, तब जातकर्म और नामकरण करना शुभ होता है। जैन मान्यता के अनुसार नामकर्म 45 दिन तक किया जा सकता है।

11. कर्णविध मुहूर्त–चैत्र, पौष, (आषाढ़ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतारा, क्षयतिथि 4,9,14 तिथियों और सम वर्षों को छोड़कर जन्मदिन से 12वें या 16वें दिन में या 6वें, 7वें, 8वें मास में या विषम वर्षों में रिक्तारहित तिथियों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में श्रवण, घनिष्ठा, पुन, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विन, पुष्य अभिजित नक्षत्रों में अष्टम स्थान ग्रह रहित हो, शुभग्रह 1,4,5,7,9,10 स्थानों में तुला, वृष, धनु, मीन, कर्क, मिथुन व कन्या लग्न हो। लग्न में गुरु हो तो कर्णछेदन शुभ होता है।

12. मुण्डन मुहूर्त– गर्भाधान से अथवा जन्म समय में विषम अर्थात् 1,3,5,7वें वर्ष में चैत्र त्यागकर उत्तरायण सूर्य में ज्येष्ठा, मृग., रेवती, चित्रा, स्वाती, पुन., श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य नक्षत्रों में 2,3,5,7,10,11,13 तिथियों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में तथा इनके लग्न और नवांश अपने जन्म राशि से अष्टम लग्न को छोड़कर लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो 3,6,11 स्थानों में पाप ग्रह हों तो संक्रांति के दिन को त्यागकर मुण्डन शुभ होता है। लड़के की माता को 5 मास से अधिक गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है परन्तु 5 वर्ष से अधिक अवस्था वाले बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ व अगहन मास में नहीं करना चाहिए।

13. अक्षराम्भ मुहूर्त– जन्म से 5वें, 7वें वर्ष में 2,3,5,6,10,11,12 तिथियों में उत्तरायण सूर्य में हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, स्वाति, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा और अनुराधा नक्षत्र में भद्रा आदि दोषों को छोड़कर 2,3,6,12 लग्न में शुभ ग्रहों के रहते परन्तु अष्टम स्थान में कोई ग्रह नहीं हो तब अक्षराम्भ शुभ होता है।

14. विद्यारम्भ मुहूर्त– जन्म से 5 वर्ष में कुम्भ के सूर्य को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को 2,3,5,6,10,11,12 तिथियों में कृष्णपक्ष की पंचमी तक अश्वि. मृग आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्लेषा तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल नक्षत्रों में जन्म लग्न से 1,4,5,7, 9,10 स्थानों में शुभ ग्रह हो तो विद्यारम्भ शुभ होता है। किसी-किसी के मत से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती और अनुराधा में भी विद्यारम्भ शुभ होता है।

15. यज्ञोपवीत मुहूर्त– हस्त, अश्वि, पुष्य तीनों उत्तरा रोहिणी, आश्लेषा, पुन., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृग., मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों पूर्वा और आर्द्रा नक्षत्रों में रवि, बुध, गुरु, शुक्र और चन्द्रवार को शुक्ल पक्ष की 2,3,5,10,11, 12 तथा कृष्णपक्ष की 2,3,5 तिथियों में परन्तु आषाढ़ शुक्ल 10 ज्येष्ठ शुक्ल 2 पौष शुक्ल 11 माघ शुक्ल 12 और संक्रांति के दिनों को छोड़कर मध्याह्नकाल के पहिले शुभ है। गुरु, शुक्र, चन्द्र और लग्नेश 6,8 स्थानों में चन्द्र, शुक्र 12 स्थानों में पापग्रह 1,5,8 स्थानों में अशुभ होते हैं।

16. विवाह मुहूर्त– मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, स्वाति, मघा, रोहिणी इन नक्षत्रों में और ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, मार्गशीर्ष, आषाढ़ इन महीनों में विवाह करना शुभ है। विवाह का सामान्य दिन पंचांग में लिखा रहता है। अतः पंचांग के दिन को लेकर उस दिन वर-कन्या के लिये यह विचार करना-कन्या के लिये गुरुबल, वर के लिये सूर्यबल, दोनों के लिए चन्द्रबल देख लेना चाहिए।

गुरुबल : बृहस्पति कन्या की राशि से तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश, द्वितीय और सप्तम राशि में शुभ प्रथम, द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम राशि में दान देने से शुभ और चतुर्थ, अष्टम, द्वादश राशि में अशुभ होता है। सूर्यबल-वर की राशि से 3,6,10,11,2 और 7 राशि में शुभ 1,2,5,7,9 राशि में दान देने से शुभ और 4,8,12 राशि में अशुभ होता है। चन्द्रबल- चन्द्रमा वर और कन्या की राशि से 3,6,7,10,11 शुभ 1,2,5,9 दान देने में शुभ और 4,8,12 अशुभ होते हैं। लग्नशुद्धि - लग्न से 12वें शनि, 10वें मंगल, 3रे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा और क्रूर गृह अच्छे नहीं होते है। लग्नेश और सौम्य ग्रह आठवें में अच्छे न हीं होते और 7वें में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है।

17. वधू प्रवेश मुहूर्त– विवाह होने के बाद पिता के घर से पति घर प्रथम बार जाने को वधू प्रवेश कहते हैं । विवाह के दिन से के भीतर सम दिनों में अथवा 5वें, 9वें दिन इसके उपरान्त एक मास के अन्दर विषम दिनों में एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त 3रे, 5वें वर्ष में भी वधू प्रवेश शुभ है, 5 वर्ष के बाद जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। भद्रादि दोष रहित शुभ तिथियाँ 1,2,3,5,7,9,10,11,15। शुभवार-सोम, गुरु, शुक्र, शनि। नक्षत्र- रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, मृग, श्रवण, धनिष्ठा, मूल और स्वाति नक्षत्र में वधू प्रवेश शुभ होता है।

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती इन नक्षत्रों में 1,2,3,4,7,10,11,12,13,15 इन तिथियों में चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र दिनों में 2,3,5,6,8,9,11,12 लग्नों में लग्न से 8,12 स्थानों में पाप ग्रह तथा शुभ ग्रह न होवें। चन्द्रग्रहण न होवे, चन्द्रमा बलवान हो, गुरु, शुक्र, बाल, वृद्ध तथा अस्त ना होवे। वृष चक्र शुद्धि (सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से 7 नक्षत्र अशुभ 11 नक्षत्र शुभ 10 नक्षत्र अशुभ) होवें तो गृहारम्भ शुभ होता है, जिसका फल निम्न है-

वृषवास्तु चक्र

वृषभ के अंग	सिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिणा कुक्षी	पुच्छ	वामकुछि	मुख
नक्षत्र	3	4	4	3	4	3	4	3
फल	दाह	शून्य	स्थिरता	लक्ष्मी	लाभ	स्वानी नाश	दरिद्रता	सर्वदापीड़ा

19. गृहारम्भ में खात का विचार– सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में अग्नि कोण में वृश्चिक, धनु, मकर के सूर्य में ईशान कोण में, कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में वायव्य कोण में, वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य में नैऋत्य कोण में खात (मकान की नींव) शुभ होता है। अधिक आचार्यों का मत है कि शिलान्यास सर्वदा अग्नि कोण में ही होना चाहिए।

20. नूतन गृह प्रवेश– नवीन घर में माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ महीनों में, उत्तरा फाल्गुनी, उ.षा, उ.भा., रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, नक्षत्रों में तथा सोम, बुध, गुरु, शुक्र शनि दिनों में 2,3,5,6,7,10,11,12,13,15 तिथियों में चन्द्ररहित स्थिर लग्न में (2,5,8,11 उत्तम है) 3,6,9,12 मध्यम है। लग्न शुद्धि 1,2,5,7,9,10,12 स्थानों में शुभ ग्रह होते हैं। 3,6,11 स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। 4,8 स्थान में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। रवि वाम हो। (लग्न से 8,9,10,11,12 स्थानों में सूर्य हो तो पूर्व मुख, लग्न से 5,6,7,8,9 स्थानों में सूर्य हो तो दक्षिण मुख, लग्न से 2,3,4,5,6 स्थानों में सूर्य हो तो पश्चिम मुख, लग्न से 11,12,1,2,3 स्थान में सूर्य हो तो उत्तर मुखी मकान में प्रवेश शुभ होता है।) प्रवेश के समय चन्द्रमा सम्मुख या पीठ पीछे नहीं होना चाहिए, दायें या बायें होना चाहिए। गृह प्रवेश में कलश चक्र शुद्धि होना अनिवार्य है। चन्द्रबल व गुरु, शुक्र का बल देखकर प्रवेश करना चाहिए।

पुनर्निर्मित गृह प्रवेश मुहूर्त चक्र

नक्षत्र	शतभिषा, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रोहणी
नक्षत्र	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि
वार	2,3,5,6,7,10,11,12,13
मास	कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ

कलश चक्र

गृह प्रवेश में कलशचक्र शुद्धि होना अनिवार्य है। सूर्य नक्षत्र से कार्य नक्षत्र की गणनानुसार उसका फल निम्न है।

नक्षत्र	1	2,3 4,5	6,7 8,9	10,11 12,13	14,15 16,17	18,19 20,21	22,23 24	25,26 27
फल	अग्निभय	उजाड	लाभ	धन	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता

21. शांति/पौष्टिक कार्य के मुहूर्त– अश्विनी, पुष्य, हस्त, उ.फाल्गुनी, उ.षाढ़, उ.भाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, अनुराधा, मघा इन नक्षत्रों में 2,3,5,6,7,10, 11,12,13 तिथियों में सोम, बुध गुरु, शुक्र वारों में शांतिक और पौष्टिक कार्य करना शुभ है।

22. कुआँ खुदवाने का मुहूर्त–हस्त, अनुराधा , उत्तरा 3, शतभिषा, मूल, रोहिणी, पुष्य, मृग, पू.षा., नक्षत्रों में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र दिनों में 4,9,14 तिथियों को त्यागकर अन्य तिथियों में भद्रादि दोष रहित शुभ लग्न में गुरु एवं बुध बली हो पापग्रह निर्बल हो शुक्र या चन्द्रमा जलचर राशिगत लग्न व चतुर्थ हो गुरु, शुक्र अस्त न हो तो जलाशय (कुआँ, तालाब आदि) खुदवाना शुभ होता है।

23. कूपचक्र शुद्धि / कूप दिशाफल– रोहिणी नक्षत्र से दिनावधि नक्षत्र तक गिने, पहिले 3 नक्षत्र शीघ्र स्वादुजल, 3 निर्जल, 3 निर्मलजल, 3 जलहानि, 3 मधुरजल, 3 क्षारजल,3 मिश्रितजल, 3 मीठा जल, 3 क्षारजल होगा।

24. दुकान करने का मूहुर्त– मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनु, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि. नक्षत्रों में 1,2,3,5,6,7,8,10,11,13,15, तिथियों में जैसे- रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र,शनि दिनों में शुभ लग्न (कुम्भ हो छोड़कर सब शुभ हैं) जब चन्द्रमा, शुक्र लग्न में हो तो 8,12 स्थानों में पाप ग्रह न हो 2,10,11 स्थानों में शुभ ग्रह हो उस समय दुकान खोलना चाहिए।

25. वस्त्र/आभूषण ग्रहण करने का मुहूर्त– रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, पुनर्वसु, नक्षत्रों में बुध,गुरु, शुक्र वारों में 2,3,5,7,8,10,11,12,13,15 तिथियों में वस्त्र/आभूषण धारण श्रेष्ठ होता है।

26. अधिकारी से मिलने का मुहूर्त– श्रवण, घनिष्ठा, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, स्वाति इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में 2,3,5,7,11,13 इन तिथियों में उच्च वर्ग से मिलना लाभकारी है।

27. सर्वारम्भ मुहूर्त– लग्न से बारहवीं और आठवाँ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह नहीं हो तथा जन्म लग्न व जन्म राशि से तीसरा, छठा, दसवाँ, ग्यारहवाँ लग्न हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभ ग्रह युक्त हो, चन्द्रमा जन्म लग्न व जन्म राशि से तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें स्थान में हो, तो सभी कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

28. मन्दिर निर्माण का मुहूर्त– मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृतिका, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, भरणी, मघा-इन नक्षत्रों में तथा मंगलवार और बुधवार को मन्दिर के लिये नींव खुदवाना शुभ है। नींव खुदवाते समय राहु के मुख का त्याग करना आवश्यक है अर्थात् राहु के पृष्ठ भाग से नींव खुदवाना चाहिए। पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, मृगशिरा, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, रोहिणी और धनिष्ठा- इन नक्षत्रों में 2,3,5,7,11,13 इन तिथियों में एवं रवि, सोम, बुध, गुरु, और शुक्र- इन वारों में नींव भरना तथा जिनालय निर्माण का कार्य आरम्भ करना श्रेष्ठ है।

29. दीक्षा मुहूर्त– अश्विनी, रोहिणी, रेवती, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मृगशिरा, पुनर्वसु, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में 2,3,5,7,10,11,12 इन तिथियों में। चैत्र, वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीनों में प्रीति आयुष्यमान, सौभाग्य सुकर्मा, बुद्धि, ध्रुव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल और ऐन्द्र योग में 2,3,4,5,6,7,9,12 इन लग्नों में और 3,6,11 भाव में पापग्रह रहते हुए तथा 1,4,5,7,9,10 इन भावों में शुभ ग्रह हों तो मुनि दीक्षा देना शुभ होता है और साधक चारित्र में दृढ़ रहता है।

30. होमाहुति का नक्षत्र मुहूर्त– सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उससे तीन-तीन नक्षत्रों का एक-एक त्रिक होता है। इस प्रकार 27 नक्षत्रों के 9 त्रिक होते हैं जिसमें 1-सूर्य का- शोक, 2-बुध का- लक्ष्मी व सुख, 3- शुक्र का- धनलाभ, 4- शनि का-पीड़ा, 5- चन्द्र का-लाभ, 6- मंगल का- बन्धु-बन्धन (मृत्यु), 7- गुरु का- द्रव्य का लाभ, 8- राहु का- हानि, 9 केतु का- मृत्यु।

31. अग्निवास– शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि तक एवं रविवार से अभीष्ट दिन तक संख्याओं के योग में एक जोड़कर चार का भाग से तीन एवं शून्य शेष में उत्तम, एक शेष में प्राणों को नाश एवं दो शेष होने पर अर्थ का नाश, फल प्राप्त होता है।

32. बड़े-बड़े व्यापार करने का मुहूर्त– हस्त, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा चित्रा- इन नक्षत्रों में शुक्र, बुध, गुरु- इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी, त्रयोदशी- इन तिथियों में बड़े-बड़े व्यापार संबंधी कारोबार करना शुभ है।

33.

द्विपुष्कर योग	
तिथि	2,7,12
वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
नक्षत्र	चित्रा, मृगशिरा, धनिष्ठा

34.

त्रिपुष्कर योग	
तिथि	2,7,12
वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
नक्षत्र	विशाखा, उ.फा, पू.फा, एन कृति उ.षा.

आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुये
गिन्नी ग्रुप परिवार, इंदौर

संस्कार सागर पत्रिका आचार्य श्री को
भेंट करते हुये गजेन्द्र जी (गिन्नी ग्रुप) इंदौर

प्रमुख व्रत करने की विधि

1. व्रत का उद्यापन- व्रत की मर्यादा पूर्ण हो जाने पर स्वशक्ति के अनुसार उद्यापन करें , यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो व्रत का विधान (मर्यादा) है, उससे दूना करें।

2. उद्यापन विधि- खूब ऊँचे-ऊँचे विशाल मंदिर बनवायें और उनमें बड़े स मारोहपूर्वक प्रतिष्ठा कराकर जिन प्रतिमा विराजमान करें। पश्चात् चतुर्विध संघ के साथ प्रभावनापूर्वक महा-अभिषेक कर महापूजा करें। पश्चात् घंटा, झालर, चमर, छत्र, सिंहासन, चँदोवा, झारी, भृंगार, आरती आदि अनेक धर्मोपकरण शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक देवें। आचार्यादि महापुरुषों को धर्मवृद्धि तथा ज्ञानवृद्धि हेतु शास्त्र प्रदान करें और उत्तमोत्तम बाजे, गीत और नृत्य आदि के आयोजन से मंदिर में महान उत्सव करें। चतुर्विध संघ को विशिष्ट सम्मान के साथ भक्तिपूर्वक बुलाकर अत्यन्त प्रमोद से आहारादि चतुर्विध दान देवें। भगवान जिनेन्द्र के शासन का माहात्म्य प्रकट कर खूब प्रभावना करें। इस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन कर व्रत विसर्जित करें।

3. भाद्रपद मास में व्रतों की प्रधानता- जिस प्रकार मनुष्यों में श्रेष्ठ राजा माना जाता है। उसी प्रकार समस्त मासों में भाद्रपद मास भी श्रेष्ठ है, क्योंकि वह अनेक प्रकार के व्रतों का स्थान- स्वरूप है और धर्म का प्रधान कारण है।

प्रमुख व्रत-अष्टाह्निक व्रत

अष्टाह्निक व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है- आषाढ़ कार्तिक और फाल्गुन। इन महीनों के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारंभ होकर पूर्णमासी को यह व्रत पूर्ण होता है। इस व्रत की विधियाँ हैं-

1. उत्तम विधि- सप्तमी के दिन एकाशन करके उपवास की प्रतिज्ञा करें , अष्टमी से पूर्णमासी तक 8 उपवास करेंर। पश्चात् एकम् को पारणा करें। दसों दिन धर्मध्यान में व्यतीत करें।

2. मध्यम विधि (कोमली विधि)-(1) सप्तमी के दिन एकाशन कर उपवास की प्रतिज्ञा करें, अष्टमी का उपवास करें, इस दिन नन्दीश्वर संज्ञा है। ॐ ह्रीं नंदीश्वर संज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (10,00,000) दस लाख उपवास के बराबर है। (2) नवमी के दिन पारणा करें। इस दिन की अष्ट महाविभूति संज्ञा है। ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतिसंज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (10,60,000) दस लाख साठ हजार उपवास के बराबर है। (3) दशमी के दिन सिर्फ पानी और चावल का आहार करें। इस दिन की त्रिलोकसार संज्ञा है। ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (10,00,000) दस लाख उपवास के बराबर है। (4) एकादशी के दिन एक बार अल्प आहार करें। इस दिन की चतुर्मुख संज्ञा है। ॐ ह्रीं चतुर्मुख संज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (5,00,000) पाँच लाख उपवास के बराबर है। (5) द्वादशी के दिन आहार करें। इस दिन की पंच महालक्षण संज्ञा है। ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (84,00,000) चौरासी लाख उपवास के बराबर है। (6) त्रयोदशी के दिन सिर्फ जल के साथ नीरस एक अन्न का आहार करें। इस दि की स्वर्गसोपान संज्ञा है। ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (40,00,000) चालीस लाख उपवास के बराबर है। (7) चर्तुदशी के दिन की सर्वसम्पत्ति संज्ञा है। ॐ ह्रीं सिद्धचक्र संज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (1,00,00,000) एक करोड़ उपवास के बराबर है। (8) पूर्णमासी को उपवास करें। इस दिन की इन्द्रध्वज संज्ञा है। ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। इस दिन का फल (3,50,00,000) तीन करोड़ पचास लाख उपवास के बराबर है।

3. जघन्य विधि- अष्टमी से पूर्णिमा पर्यन्त एकाशन करें।

विशेष- सप्तमी से एकम् तक दश दिन धर्मध्यान में ही व्यतीत करें और पूर्ण प्रकार शील पालें। अनतराय टाल कर मौन सहित आहार करें।

मर्यादा- 1. सत्रह वर्ष (51 शाख), 2. आठ वर्ष (24 शाख), 3. पाँव वर्ष (15 शाख), 4. तीन वर्ष (9 शाख), 5. एक वर्ष (3 शाख)।

शक्ति के अनुसार मर्यादा धारण कर व्रत पूर्ण करें। यदि प्रत्येक दिन का पृथक्-पृथक् जाप्य न कर सकें तो- ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्-जिनालयेभ्यो नमः इस समुच्चय मंत्र का जाप्य त्रिकाल देवें। यदि उद्यापन की शक्ति न हो जो व्रत दूना करें। व्रत के दिनों में प्रत्येक दिन अभिषेक पूर्वक महोत्सव सहित पूजन करना चाहिए।

षोडशकारण व्रत

यह व्रत एक वर्ष में भादों, माघ और चैत्र- इन तीन महीनों में आता है। कृष्णपक्ष की एकम् से द्वितीय मास की कृष्ण एकम् तक 32 दिन किया जाता है। उत्तम, मध्यम और जघन्य-इस प्रकार तीन विधि से होता है।

1. उत्तम विधि-बत्तीसर दिन के 32 उपवास।
2. मध्यम विधि- सोलह उपवास और सोलह एकाशन (पारणा)।
3. जघन्य विधि-बत्तीस एकाशन।

मर्यादा- उत्तम 16 वर्ष, मध्यम 5 वर्ष और जघन्य 1 वर्ष प्रमाण है। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न होय तो व्रत दूना करें। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

दशलक्षण व्रत

यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है अर्थात् माघ, चैत्र और भाद्रपद। शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारंभ होकर चतुर्दशी को पूर्ण होता है। इसकी तीन विधियाँ हैं-

1. उत्तम विधि-दश दिन के दश उपवास करना।
2. मध्यम विधि- पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी इन चार दिनो में उपवास और शेष छह दिनों में छह एकाशन।
3. जघन्य विधि- दस दिन के दस एकाशन करना। ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्भूत उत्तमक्षमादि

दशलक्षणैकधर्माय नमः- इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। दस वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करें।

रत्नत्रय व्रत

यह व्रत तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र शुक्ला द्वादशी को मध्यान्ह भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तीनों दिन उपवास करें और पड़िमा के दिन पारणा करें। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयमपूर्वक व्यतीत करें। ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञानचारित्रेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें। शक्ति हीन उपवास के स्थान में एकाशन करें।

पुष्पांजलि व्रत

यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल पंचमी से प्रारंभ होकर के नवमी को समाप्त होता है। इस व्रत की उत्तम, मध्यम और जघन्य भेद से तीन विधियाँ हैं-

1. उत्तम विधि-पंचमी से नवमी तक पाँच उपवास करें।
2. मध्यम विधि- पंचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास करें, षष्ठी और अष्टमी का एकाशन करें।
3. जघन्य विधि- पंचमी और नवमी का उपवास करें। षष्ठी, सप्तमी और अष्टमी का एकाशन करें।

इस प्रकार पाँच वर्ष करें। पश्चात् उद्यापन करें। प्रतिदिन व्रत के दिनों में-ॐ ह्रीं अशीतिजिनालेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

रवि व्रत

यह व्रत आषाढ़ शुक्ल के अंतिम रविवार से प्रारंभ होता है। आषाढ़ का रविवार 1, श्रावण के 4, भाद्रपद के 4 इस प्रकार एक वर्ष में नौ (9) रविवार किया जाता है। इस प्रकार नौ वर्ष में 81 रविार होते हैं।

यदि थोड़े ही समय में करने का भाव हो तो आषाढ़ के अंतिम रविवार से बारह महीनों के 48 रविवार कर पूर्ण करें। इस व्रत की विधियाँ चार हैं।

1. उत्तम विधि- प्रति रविवार प्रोषधोपवास करना।
2. दूसरी विधि- आमल (इमली-चावल) का भोजन लेना।
3. तीसरी विधि- एक लठाना। (एक बार का परोसा भोजन करना)।
4. चतुर्थ विधि- एकाशन करना।

इस प्रकार जिस किसी विधि से व्रत करें, व्रत के दिनों में पार्श्वनाथ भगवान की अभिषेक पूर्वक पूजन करें। अवधि समाप्त होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करें। ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।

णमोकार पैंतीसी व्रत

यह व्रत डेढ़ व र्ष अर्थात् एक वर्ष और छह मास में समाप्त होता है और डेढ़ वर्ष की अवधि के भीतर सिर्फ पैंतीस दिन ही व्रत के होते हैं। आषाढ़ शुक्ल सप्तमी से यह व्रत शुरु होता है। उसकी विधि निम्न प्रकार है-

प्रथम आषाढ़ शुक्ला सप्तमी-का 1 उपवास करें। फिर श्रावण की सप्तमी-2, भादों की सप्तमी-2 और अश्विन की सप्तमी -2 इस प्रकार सात उपवास करें। पश्चात् कार्तिक कृष्ण पंचमी से पौष कृष्ण पंचमी तक अर्थात् पाँच पंचमियों के पाँच उपवास करें। फिर पौष कृष्ण चतुर्दशी से चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों सात उपवास करें। फिर चैत्र शुक्ल चतुर्दशी से आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों के उपवास करें। फिर श्रावण कृष्ण नवमी से अगहन कृष्ण नवमी तक नव नवमियों के नव उपवास करें। इस प्रकार 35 उपवास द्वारा व्रत पूरा करें। प्रतिदिन अभिषेक पूर्वक णमोकार मंत्र पूजन करें, पश्चात् उद्यापन करें।

बारह सौ चौंतीस (चारित्र शुद्धि) व्रत

यह व्रत 10 वर्ष, 3 माह और 15 दिन में संपन्न होता है, जिसमें 1234 उपवास होते हैं। अर्थात प्रत्येक माह की दो दोज, दो पंचमी, दो अष्टमी, दो एकादशी और दो चतुर्दशी- इस प्रकार एक माह में 10 उपवास किये जाते है, इस व्रत का प्रारम्भ भाद्रपद शुक्ला पडिमा से होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल जाप्य ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः मंत्र का देना चाहिए। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करना चाहिए।

कवलचन्द्रायण व्रत

यह व्रत एक महीने में समाप्त होता है। यथा जिस किसी मास की अमावस्या का उपवास कर शुरु करें फिर एकम् को एक ग्रास, दोज को दो ग्रास, इस प्रकार प्रतिदिन 1-1 ग्रास भोजन बढ़ाते हुए चतुर्दशी को 14 ग्रास लेंवे। पूर्णमासी का उपवास करें। फिर कृष्ण पक्ष की पड़िमा को 14 ग्रास, दोज को 13 ग्रास इस प्रकार प्रतिदिन एक-एक कम करते हुए चतुर्दशी को एक ग्रास भोजन लेंवे और अमावस्या का उपवास करें। इस प्रकार एक माह में व्रत पूर्ण करें। यदि ग्रास लेते समय कदाचित हाथ या मुँह से ग्रास गिर पड़े तो अंतराय माने। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करें। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करें।

श्रुतपंचमी व्रत

- यह व्रत 5 वर्ष में पूर्ण होता है।
- यह ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है। उस दिन उपवास करें।
- मंत्र जाप- ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुतज्ञानाय नमः इस मंत्र का जाप करें।
- व्रत पूरा होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दुगुना करें।

सप्त परमस्थान व्रत

- यह व्रत सात साल किया जाता है।
- श्रावण शुक्ल एकम् से सप्तमी तक यह व्रत किया जाता है।

1. उत्तम विधि- सात उपवास करें।
2. मध्यम विधि- प्रथम और अंतिम दिन उपवास करें, शेष 5 दिन एकाशन करें।
3. जघन्य विधि- सात दिन एकाशन करें।

- पूजन-अभिषेक करें एवं ॐ ह्रीं सप्त परमस्थान प्राप्त श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो नमः मंत्र का जाप करें।
- व्रत पूरा होने पर उद्यापन करें। शक्ति न हो तो व्रतदूना करें।

समवसरण व्रत

- यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करना। चौबीस चतुर्दशी पूर्ण होने पर उद्यापन करें।
- मंत्र जाप- ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशय सकल गुणकरण्डाय श्री सर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूरा होने पर उद्यापन करें। शक्ति नहीं होने पर व्रत दूना करें।

तीन चौबीस व्रत

- यह व्रत तीन वर्ष में पूरा होता है।
- यह व्रत भाद्रपद शुक्ल तृतीया के दिन किया जाता है।
- मंत्र जाप- णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

मोक्ष सप्तमी व्रत

- यह व्रत सात वर्ष में पूरा होता है।
- प्रत्येक श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन उपवास करें।
- पूजन-पार्श्वनाथ भगवान की करें।
- मंत्र जाप ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

चंदन षष्ठी व्रत

- यह व्रत छह वर्षों में पूरा होता है।
- प्रत्येक वर्ष भादों कृष्ण षष्ठी के दिन उपवास करें।
- मंत्र जाप- नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

सुगंध दशमी व्रत

- यह व्रत दस वर्षों में पूर्ण होता है।
- प्रत्येक वर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को उपवास करें।
- मंत्र जाप- नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

अनंत चतुर्दशी व्रत

- यह व्रत चौदह वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपदशुक्ल चतुर्दशी के दिन उपवास करें।
- पूजन-अनंतनाथ भगवान की करें।
- विशेष- यह व्रत भाद्रपद शुक्ल 11 से शुरु होता है। इसलिये 11, 12, 13 का एकाशन, चौदस का उपवास और पूर्णिमा का एकाशन इस तरह पाँच दिन किया जाता है।
- मंत्र जाप- ॐ ह्रीं अर्हँ हं सः अनंत केवलिने नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- वत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

अक्षयफल दशमी व्रत

- यह व्रत दस वर्ष में पूरा होता है। प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी के दिन उपवास करें।
- मंत्र जाप- ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

रोटतीज व्रत (त्रिलोक तीज)

- यह व्रत तीन वर्ष में पूर्ण हो जाता है।
- प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ल तीज के दिन उपवास करें और अभिषेक पूर्वक त्रैलोक्य विधान करें।
- मंत्र जाप- ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।

जाप्य मंत्र

सुख शांति हेतु प्रतिदिन जाप करें

रविवार को	- ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
सोमवार को	- ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
मंगलवार को	-ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः
बुधवार को	- ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः
गुरुवार को	- ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः
शुक्रवार को	- ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः
शनिवार को	- ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ नमः

मनोवांछित हेतु जाप

ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा मम सर्वविघ्न शांन्ति कुरु कुरु स्वाहा।

सर्वशान्ति हेतु जाप

ॐ ह्री जगच्छांतिकराय श्री शांन्तिनाथाय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

रत्नत्रय जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः।

दशलक्षण जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-धर्मांगाय नमः।
इसी प्रकार उत्तम मार्दव आदि धर्मों के मन्त्र जपना चाहिए।

षोडशकारण जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं दर्शनविशुद्धये नमः।
इसी प्रकार विनय आदि धर्मों के मन्त्र जपना चाहिए।

सम्मेदशिखर व्रत मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

नन्दीश्वर व्रत
(अष्टाह्निका व्रत) जाप्य मंत्र

(1) ॐ ह्रीं नन्दीश्वर-संज्ञाय नमः (2) ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति-संज्ञाय नमः (3) ॐ ह्रीं त्रिलोकसार-संज्ञाय नमः (4) ॐ ह्रीं चतुर्मुख-संज्ञाय नमः। (5) ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण-संज्ञाय नमः। (6) ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान-संज्ञाय नमः (7) ॐ ह्री सिद्धचक्रसंज्ञाय नमः (8) ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज-संज्ञाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वर-द्वीपस्थ द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नमः।

पुष्पांजलि व्रत जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अशीति- जिनालयेभ्यो नमः।

रोहिणी व्रत जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः।

रोगनाशक मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः। आरोग्य परमैश्वर्य कुरु कुरु स्वाहा।
यह मंत्र पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सामने शुद्ध भाव और क्रियापूर्वक 108 बार जपना चाहिए।

ऐश्वर्यदायक मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं असि आउस नमः स्वाहा।
सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में मुख करें प्रतिदिन 108 बार जपना चाहिए।

सर्वसिद्धिदायक मंत्र

ॐ ह्री क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः। समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक 108 बार जपना चाहिए।

सर्वग्रह शान्ति मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

रोग निवारक मंत्र

ॐ ह्रीं सकल- रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः।

शांतिकारक मंत्र

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः।

ऋषि-मण्डल जाप्य मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

सिद्धचक्र विधान के समय का जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अनाहत-विद्याधिपति त्रैलोक्यनाथाय नमः सर्व शांन्ति कुरु कुरु स्वाहा।

लघुशान्ति मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

वेदीप्रतिष्ठा, कलशारोहण तथा बिम्बस्थापन के समय का जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असिआउसा अनाहत विधायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। मम सर्वग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय-घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- दीप जलाकर धूप देते हुए नैष्ठिक रहकर इस मंत्र स्वयं जाप करें या अन्य द्वारा करावें। यदि अन्य व्यक्ति जाप करें तो मम के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड लें- अमुकस्य सर्वग्रहारिष्टान निवारय आदि। इस मंत्र का सवा लाख जाप करने से ग्रहबाधा दूर हो जाती है। कम से कम इस मन्त्र का 31 हजार जाप करना चाहिए। जाप के अनन्तर दशांश आहुति देकर हवन भी करें।

निर्विवाद सत्य पर विवाद का कहर

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः प्रकीर्णभीमा-शनिवायुवृष्टिभिः ।
वलाहकैवेरिवशैरुपद्रुतो, महामना यो न चचाल योगतः ।
स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः, समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान् ।
या सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते, विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः ॥
स्वयं भू स्तोत्र

जल वर्षाते घने बादले काले-काले डोल रहे ।
झंझा चलती बिजली तड़की घुमड़-घुमड़ कर बोल रहे ॥
पूर्व वैर-वश कमठ देव हो इस विधि तुमको कष्ट दिया ।
किन्तु ध्यान में अविचल प्रभु हो घाति कर्म का नष्ट किया ॥
समीचीन विद्या-तप के प्रभु रहे प्रणेता वरदानी ।
उग्र-वंश मय विशाल नभ के दिव्य सूर्य, पूरण ज्ञानी ॥
कुपथ निराकृत कर भ्रमितों को पथिक सुपथ के बिना दिये ।
पार्श्वनाथ मम पास वास बस, करो, देर अब बिना किये ।

भौगोलिक स्थिति

महाराष्ट्र प्रांत के आकोला जिले में वाशीम तालुका में स्थित शिरपुर इस ग्राम में श्री दिगम्बर जैन अंतरीक्ष पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र विद्यमान है। रेलमार्ग से बम्बई हावडा रेलमार्ग पर अकोला जंक्शन प्रमुख रेल्वे स्टेशन है। यहां से वाशीम-शिरपुर के लिये निमित बसों की पर्याप्त सुविधा है। पक्की सडके है। आकोला की ओर से सड़क मार्ग पर मालेगांव से शिरपुर 6 किमी. है। नांदेड से वाशीम-मालेगांव होते हुये भी आ सकते है। खण्डवा पूर्णा छोटी रेल्वे लाईन पर वाशीम स्टेशन यहां से 30 किमी. पर है

क्षेत्र परिचय

श्री दिगम्बर जैन पवली मंदिर

शिरपुर बस स्टैंड से आधा कि.मी. पश्चिम में एक विशाल उद्यान में अपनी मनोरम महिमा से परिपूर्ण तीन अति प्राचीन दिगम्बर जिनालय भव्य आकर्षण के सहज केन्द हैं। इन हेमाडपन्थी, खजुराहो प्रतिकृति कलाकृति, अद्वितीय पुरातत्व शिल्पी के बेजोड विशाल पाषाण खण्डों मे उत्कीर्ण कला के साथ ही खडगासन दिगम्बर प्रतिमाएं दिगम्बर स्वामित्व को प्रगट करती हैं।

महामहिम अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की बस्ती

तीन तलघर सहित राजा एल द्वारा निर्मित भव्य मंदिर जिसमें कुल 16 वेदियां है। 15 वेदियों पर सम्पूर्ण रूप से दिगम्बर प्रतिमाएं विराजमान है। इस मंदिर पर ध्वज फहराने का अधिकार केवल दिगम्बर जैनियों को है। इसमें विराजमान पद्मावती देवी की केवल दिगम्बर जैन ही पूजा अर्चना कर सकते है। मंदिर की छत पर चूने से बनी कलाकृतियो में अनेकों खडगासन प्रतिमाऐं है।

इसी मंदिर में 23वें तीर्थंकर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महामहिम मूल रूप से दिगम्बर अवस्था में विराजमान है। यह प्रतिमा अपने आप में अद्वितीय है। यह अंतरिक्ष में अधर है। कहते हैं पहले यह प्रतिमा अंतरिक्ष में इतनी ऊंची अधर में स्थित थी कि इसके नीचे से एक घुडसवार गुजर सकता था कालांतर में यह अंतर कम होता गया, किंतु आज भी एक कपडा इसके नीचे से आर पार हो जाता है। वास्तव में इस युग का यह एक महान आश्चर्य ही है।

इस सम्बंध में 12वीं शताब्दि में दिगम्बर जैन आचार्य श्री मदनकीर्ति द्वार रचित अपने जिन शासन चर्तुविंशतिका में कहा गया है।

पत्रं यत्र विहायसि प्रविपुले स्थातुं क्षणं न क्षमं
तत्रास्तेगुणरत्नरोहणगिरीयो देव देवो महान्।
चित्रं नात्रकरोति कस्य मनसो दृष्टः पुरे श्रीपुरे,
स श्रीपार्श्वजिनेश्वरो विजयते दिग्वाससां शासन ॥

दिगम्बर जैनाचार्य श्री मदनकीर्ति द्वारा रचित (12 वीं शताब्दी)

हिन्दी पद्यानुवाद

पत्र टिके ना जहां अधर में-गुणरत्नों का गिरिवर हो,
कितना विस्मय किसे नहीं हो चलो देख लो शिरपुर को।
देवों के भी देव पार्श्वजिन-अन्तिरिक्ष में शान्त रहे,
युगों युगों तक दिगम्बरों का जिन शासन जयवंत रहे॥

आचार्य विद्यासगर

अन्तरीक्ष (अधर) में अवस्थित श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की दिगम्बर मुद्रा में अतिशय युक्त अर्धपद्मासन काले पाषाण की प्रतिमा।

दिगम्बरत्व की प्राचीनता/मौलिकता

विगत 100 वर्षो से श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की प्रतिमा विशेष के संबंध में श्वेताम्बर सम्प्रदाय से हमारा विवाद चल रहा है। आईये हम दिगम्बरत्व की प्राचीनता के संबन्ध में सर्वप्रथम गौर करें।

इतिहासातीत काल में दिगम्बरत्व

प्राग् ऐतिहासिक काल के वेद दिगम्बरत्व की प्राचीनता मौलिकता सिद्ध करते हुये कहते हैं :-

आतिथ्य रूपं मासरम् महावीरस्य नग्नहुः ।
रूपमुपसदा रात्रीः सुरासुता ॥

आतिथ्य भाव से महीनों तक रहने वाले पराक्रम शील नग्न रूप की उपासना करो जिससे ये तीनों मिथ्या ज्ञान दर्शन और चरित्र रूपी मद्य नष्ट होती है।

यथा जातरूप धरो निर्ग्रन्थो निष्परिग्रहः
शुक्लध्यान परायणः

(जाबालोपनिषत् सूत्र6)

निर्ग्रन्थ साधु यथाजात रूपधारी तथा शुक्ल ध्यान परायण होता है।

श्वेताम्बर साहित्य की दृष्टि में

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दहिरोम नहंसिणे
मेहुणं उवसंतस्य किं विभूसाए कारियं

नग्न शरीर रहने वाले मुंडित मस्तक दीर्घ रोम नख वाले मैथुन उपशांत चित्त वाले मुनि को श्रृंगार से क्या प्रयोजन।

(दशवेकालिक 5)

श्वेतांबराचार्य श्री आत्माराम जी ने लिखा है-

कौपीनौत्तरा संगादीनाम् त्यागिना यथाजात
रूपधरा निर्ग्रन्था निषपरिग्रहः ।

तत्वनिर्णय प्रसाद 523 पृ.

नगिना पिंडोल गाहमा। मुण्डाकण्डू विणड्डण ॥72॥
सूत्र कृतांग तं वोसज्ज वत्थमणगारे आचारंण पृ. 210

पं. बेचरदास जी मूर्ति पूजक श्वेताम्बर विद्वान ने जैन साहित्य मे विकार नामक पुस्तक में लिखा

यह श्वेताम्बर सम्प्रदाय वीतराग सन्यासी फकीर की प्रतिमा को जैसे किसी एक बालक को गहनों से लाद दिया जाता है उसी प्रकार आभूषणों से श्रृंगारित कर उसकी शोभा में वृद्धि को समझता हैं-पृष्ठ 55

वस्त्र और पात्र के अपवादिक विधान को पकड़कर उसके गुलाम बने देख पड़ते है महावीर का महात्म्य बढ़ाने के लिये उनकी नग्नता के बदले सवस्त्रता कहे तथा सुवर्णमणि और हीरा के तिगड़े से ही या देव देवियों की दौड़ धूप से ही उनका महात्म्य का उत्कर्ष होना समझते तो महात्मय को समझने का यह प्रकार सर्वथा अनुचित और विपरीत है एवं आडम्बरी सामग्री द्वारा एक परमयोगी की परीक्षा करने के समान हास्यापद है।

इतिहास एवं पुरातत्व विद्वान श्रीकंठ शास्त्री लिखते हैं

अपने दिगम्बर धर्म, योग, मार्ग, वृषभ आदि विभिन्न लांछनों की पूजा आदि बातों के कारण प्राचीन सिन्धु सभ्यता जैन धर्म के साथ अद्भुत सादृश्य रखती है।

प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता यशवंत खुशाल देशपांडे कहते है

वस्तु स्थिति इस प्रकार है कि श्री आदिनाथ से अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी और उनके 500 वर्ष बाद तक जैन धर्म का स्वरूप एकमात्र दिगम्बर ही था। विदर्भ मेरी जन्म भूमि है यहां के सभी प्राचीन मूर्ति वास्तु शिल्प आदि का अभ्यास पूर्ण निरीक्षण किया उससे निष्कर्ष निकला है कि इस भाग में मात्र दिगम्बर जैन सम्प्रदाय ही था। मुझे विदर्भ में एक भी प्राचीन श्वेतांबर मन्दिर देखने में नही आया। इस श्वेतांबरी समाज ने सन् 1816 में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ संस्थान शिरपुर के सम्पर्क में आने का प्रयास किया है। वास्तव में यह संस्थान दिगम्बर कमेटी के अधिकार में ही था।

निर्विवाद सत्य पर विवाद का कहर

1. धनप्रभुता एवं वाक्यचतुर्थ के बल पर, भाइचारे के आवरणों अभिनयों में छुपा षडयंत्र हमारे तीर्थो को हडपने हेतु है यह हमे बहुत देर से समझ में आया भक्ति के स्वरों से आती दुर्गन्ध को हम सूंघ भी नहीं सके हमारे इतिहास, तथा संस्कृति के रूप परिवर्तन करने वाले दूषित विष मिश्रित षडयंत्र को समझ रहते हम पहचान नहीं पाये।

2. दिगम्बर जैन समाज के जागृत नहीं रहने से सैकड़ों वर्षो से श्वेतांबरीय परिकल्पना जागृत होती रही और आज भी झूठे साक्ष्य तथा दस्तावेजों का निमाण कर दिगम्बरत्व की दीवार में सेंध लगायी जा रही है। दिगम्बरत्व मानव का आदर्शमय प्राकृतिक रूप है। अहिंसा का व्यवहारिक रूप, सत्य तथा अपरिग्रह को आत्मसात कराने वाला सम्यग्दर्शन का प्रेरणा स्त्रोत एवं भक्ति का एकमात्र साधन है।

3. दिगम्बरत्व की रक्षा का भार आपके कंधों पर है। क्योकि शिरपुर आदि स्थानों का विवाद मात्र मूर्ति मंदिर या भूमि तक सीमित नहीं है। समय रहते आपको इस ओर ध्यान देना होगा। अन्यथा भगवान महावीर द्वारा प्रस्थापित नग्नता एवं तत्व देशना को झूठ छल कपट से कुप्रचारित करके सत्य पर पर्दा डाला जावेगा।

मुख्य विवाद कब क्यों और कैसे ?

इ.स. 1908 में भगवान पार्श्वनाथ की दिगम्बर मूर्ति पर चक्षु लगाने कंदोरा तथा कचौटा का लेप में उभारने का प्रयास करने तथा 1959 में मूर्ति का पूर्ण लेप उतारकर मूर्ति का मूल स्वरूप परिवर्तन करने हेतु स्थायी कंदोरा व कचौटा बनाने के लिये काले पाषाण मे कुछ नयी लकीरें खींची गयी। तथा नेत्र भृकुटि, नासिका अँगूठे एवं पैर की अँगुलियों करने का प्रयास किया तभी से विशेष विवाद का जन्म हुआ।

दिगम्बरत्व के प्रमाण

सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक **श्री यादव माधव काले** द्वारा लिखित **वराड चा इतिहास** पुस्तक में उल्लेख है कि इस मंदिर का निर्माता राजा एल है। जो लाड जाति का है लाड जाति दिगम्बर जैनों का ही अंग है। सन् 1956 में इस मूर्ति पर से लेप उतारा गया था तब मूत्रि अपने वास्तविक नग्न दिगम्बर रूप में थी। उसमें कंदोरा (कट सूत्र) लंगोट या कछोटा आदि नही थे। उसी समय पुरातत्व विभाग के अधिकारियों एवं तत्कालीन एस.डी.ओ. ने अपने निरीक्षण के निष्कर्ष रूप में लिखित रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा है कि यह मूर्ति मजबूत पाषाण की पूर्ण दिगम्बर है। इसमें कोई भी श्वेताम्बर चिन्ह नहीं है। उक्त कुछ ही पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक आधार से ही स्पष्ट है कि यह सम्पूण संस्थान दिगम्बर जैनों की ही सम्पत्ती है।

प्रिव्ही कौसिंल से झूठे साक्ष्यों के आधार पर श्वेतांबरों को मात्र पूजन लेप व प्रबन्धन का अधिकार प्राप्त हुआ था। परंतु उच्च न्यायालय द्वारा संपूर्ण संसथान के स्वामित्व का अधिकार दिगम्बरों को ही प्राप्त है।

मंदिर में दो दिगम्बर जैन भट्टारकों की गादियाँ स्थापित हैं। साथ ही मंदिर में स्थित पदमावती देवी को पूजने का अधिकार मात्र दिगम्बरो को ही है। श्वेताम्बरों को पूजन का अधिकार नही है। यह आदेश न्यायालय के द्वारा घोषित किया गया। पद्मावती की उक्त मूर्ति की प्रतिष्ठा दिगम्बर जैन श्रावक बालासाकासार द्वारा वि.सं. 1930 में करायी गई है। साथ ही न्यायालय द्वारा मंदिर के ऊपर ध्वजा फहराने का अधिकार दिगम्बरों को ही प्राप्त है।

आक्रमण कुचक्र के ऐतिहासिक तथ्य

आज से लगभग 175 वर्ष पूर्व अंग्रेजों के समान ही शिरपुर में थी गुजराती श्वेतांबरी लोग आये। तब स्थानीय दिगम्बर जैनों से मंदिर में पहले इन्होंने जिनेन्द दर्शन एवं बाद में पूजन करने की भी अनुमति प्राप्त की। इसी दौरान इनके मन में क्रमशः इस क्षेत्र पर अपनी प्रभुता प्राप्त कर उसे हड़पने के भाव जागृत होने लगे।

उस समय इस क्षेत्र की व्यवस्था बलात्कार गण गादी कारंजा (महा.) के भट्टारक श्री पद्मनंदी जी के द्वारा की जाती थी। इन्होंने पोलकरों के नाम पर नौकरनामा लिखा रखा था। क्षेत्र को हड़पने तथा अपने आधिपत्य में करने के लिये श्वेताम्बरों ने संस्थान को 1846 ई.स. में दो जोड़ी चक्षु दान दिये और फिर मूर्ति को चक्षु लगाने की कुचेष्टा भी की जो उस समय असफल रही 1846 में ही दिगम्बरों ने मेहकर कोर्ट मे पोलकरों के विरूद्ध एक केस दायर किया। तब 1847 को पोलकरों ने कोर्ट में प्रतिज्ञा की, कि **श्वेताम्बरों को कहने से वह चक्षु नहीं लगायेगें। यदि चक्षु लगोयेगें तो दण्ड के भागीदार होंगे।**

ईस्वी सन् 1847 में अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की इस मुख्य मूर्ति का लेख हुआ था जिसके प्रतिष्ठाचार्य दिगम्बर जैन पंडित जयचन्द्र जी रहे। उसी समय श्वेताम्बरों ने अपनी कुटिल पालन को मूर्त रूप देने हेतु पोलकरों को प्रलोभनों से महका कर क्षेत्र के तत्कालीन भट्टारक रत्नकीर्ति के विरोध में एक केस दाखिल कराया। किन्तु उनकी यह कुटिल चाल विफल हुई एवं भट्टारक जी को इस केस में विजय प्राप्त हुई।

सभी तरफ से असफल हो जाने पर श्वेताम्बरीयाँ के स्थानीय गरीक एवं धोली दिगम्बर जैन समाज से आग्रह

अनुनय कर 27 मार्च 1986 को येण केण प्रकारेण यह लिखवा लिया कि वे श्वेताम्बर हमारे साधर्मी बंधु है अतः इनको स्वविधि से पूजन करने का अधिकार है।

स्वामित्व प्रबंध के अधिकार प्रमाणित करने वाले दस्तावेज सहायता के नाम पर 1902 ईस्वी में कल्याणचन्द लालचन्द्र येवल ने इकट्ठे किये। किंतु सस्थान पर अपना ही अधिकार अभिव्यक्त करने पर 1.4.1903 को खामंगांव महाराष्ट्र में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों पक्षों की एक सभा हुई जिसमें संयुक्त प्रबंन्धन हेतु अध्यक्ष श्यामलाल सरावगी (दिगम्बर) बने एवं अन्य 17 दिगम्बर भाई भी समिति में सम्मीलित किये गये।

पूजन आदि क्रियाओं को लेकर दोनों में विवादों के बढ़ते जाने पर 1905 में शान्ति पूवक अनुष्ठान करने हेतू पक्षों लिये अलग-अलग समय तालिका के अनुसार समय निर्धारित किया गया।

पुनः जनवरी 1908 में लेप प्रारंभ हुआ तभी 2 फरवरी को मूर्ति पर कटि सूत्र उभारने के घृणित प्रयास कराये जाने पर दिगम्बरों ने इस कृत्य का डटकर विरोध किया। तब 1909 में क्षेत्र पर श्वेताम्बर मूर्ति स्थापित करने हेतु आनन्द सागर के नेतृत्व में लगभग 500 साधू बम्बई से आये किन्तु दिगम्बरों के द्वारा विरोध करने पर यह कुचेष्टा भी श्वेताम्बरों की विफल हो गयी।

11.2.1990 में श्वेताम्बरों द्वारा दिगम्बरों के विरूद्ध पूर्ण स्वामित्व प्रबन्ध हेतु एवं 15 हजार रूपयों के नुकसान हेतू दीवानी दावा दाखिल किया गया। तथा 1927 में जाली दस्तावेजों के आधार पर श्वेताम्बरों को लेप, पूजन एवं प्रबन्ध के अधिकार प्राप्त हो गये। किन्तु क्षेत्र के स्वामित्व का अधिकार दिगम्बर जैनों को ही मिला। स्मरण रहे कि 1559 में मूर्ति पर से लेप निकाला गया, तब मूर्ति पर कोई भी श्वेतांबरीय प्रतिमा होने के चिन्ह नहीं मिले।

अहिंसा की कोरी बाते करने वाले इन श्वेताम्बरो ने 1967 में पूजन अर्चना मे निमग्न दिगम्बरों पर गुण्डों से आक्रमण कराकर आतंक फैलाया एवं जिनाराधना में निमग्न लोगों का खून बहाया। इतना ही नही ब्र. धन्यकुमार को छुरा मारकर मार डालने का जघन्य कृत्य कराया एवं गर्भवती महिलाओं के पेट पर लात मारकर गर्भ गिराने की जघन्यतम कुचेष्टा की। यह कृत्य जहाँ उन श्वेताम्बरों ने किया वहीं 1971 में चन्द्रशेखर मुनि के नेतृत्व मे बाहर से आये हुये 100 आतंकवादियों ने क्षेत्र को पूर्णतया हड़पने की असफल चेष्टा भी की।

शिरपुर में श्वेतांबरों का स्थायी एक भी परिवार नहीं है न ही कभी था। मंदिर में स्थित 16 वेदियों में से 15 वेदियों पर अभी भी पूर्ण दिगम्बर मूर्तियां ही विराजमान है। अतः यह किसी भी प्रकार से संभव नहीं कि मात्र एक मूर्ति एक आम्नाय की तथा शेष अन्य मूर्तियां दूसरे आम्नाय की हों। ऐसा कतई संभव नहीं हो सकता है।

उपरोक्त तथ्यों एवं प्रमाणों से स्पष्ट है कि संपूर्ण संस्थान केवल दिगम्बर जैनों का ही है।

तीर्थ हमारे धर्म क्षेत्र है। आत्म साधना के परम पवित्र स्थान हैं। पूर्वजों की सांस्कृतिक धरोहर हैं। संस्कृति के पावन इतिहास हैं इनका संरक्षण समाज के एक एक घटक का परम कर्तव्य है।

अंतरीक्ष पार्श्वनाथ वस्ति मंदिर दिगम्बर होने के प्रमाण

1 शिरपुर नगर का मूल निवासी कोई श्वेताम्बर नहीं है।

2 मंदिर के चौक के ऊपर चूने की निर्मित दिगम्बर मूर्ति है।

3 ध्वज फहराने का अधिकार मात्र दिगम्बरों को ही है।

4 मध्य के तल में दस वेदियों की मूर्तियों की पूजा अर्चना दिगम्बर आम्नाय (परम्परा) से होती है। कुल मिलाकर 15 वेदियाँ दिगम्बर आम्नाय की है।

5 घंटा ढोल कलश आदि पर दिगम्बर शब्द लिखा है।

6 भेयरे में तीन वेदियाँ दिगम्बर परम्परा की है।

7 दिगम्बर परम्परा के भट्टारकों की 3 गादियाँ है।

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ के संदर्भ दिगंबर विद्वानों के द्वारा रचित साहित्य

1	पासं सिरिपुरि वन्दमि	आचार्य कुंदकुंद	निवार्ण भक्ति 2039
2.	श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र	विद्यानंदि	8वीं शती
3.	शासन चतुर्विंशतिका स्तोत्र	मदनकीर्ति	12वीं शती
4.	अंतरिक्ष जिनकथा	श्री जिनसागर	1666 शक
5.	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ विनंति	भ. महिचंदकृत	1674 संवत
6.	श्रीपुर पार्श्वनाथ विनंति	लक्ष्मणकृत	16वीं सदी
7.	पार्श्वनाथ स्तोत्र	पं. चिमणाजी	1587 शक संवत
8.	पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभमल्लधारी	1103 ई.
9.	श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र	श्रुतसागर	वि.सं. 16वी सदी
10.	पार्श्वनाथ स्तवन	महिपाल	16वीं सदी
11.	श्रीपुर पार्श्वनाथ जयमाला	ब्रह्नहर्ष	1752 वि.सं.
12.	श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पूजन	महिपाल	16वीं सदी
13.	श्री पार्श्वनाथ स्तुति	अज्ञात	------
14.	श्री पार्श्वनाथ आशीर्वाद जयमाला	छत्रसेन	18वीं सदी
15.	श्रीपुर पार्श्वनाथ आरती	कविरत्नसा	18वीं सदी
16.	श्रीपार्श्वनाथ आरती	पं. अर्जुनसुत यमासा	17वीं सदी
17.	श्रीपुर पार्श्वनाथ आरती	नागपुर पोथी	------
18.	श्रीपुर पार्श्वनाथ आरती	कवियमासा	18वीं सदी
19	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ आरती	ब्रह्नजिनदास	वि.सं. 1450
20	सिरपुर पार्श्वनाथ विनती	पं. जिनदास	वि.सं. 1730

1903 पोलकर दिगम्बर श्वेताम्बर संयुक्त दिवानी प्रमुख मामले

1	11 फरवरी 1910	श्वेताम्बरों दिगम्बरों के विरुद्ध अकोला कोर्ट में
2	11 जुलाई 1918	नागपुर कोर्ट में अपील
3	1 अक्टूबर 1923	नागपुर कोर्ट का फैसला
4	1931-35	नंदीश्वर केस
5	1941-45	गद्दी केस
6		पद्मावती केस
7	1971-1981	क्षेत्रपाल केस
8		मंडप केस
9		धर्मशाला केस
10		ट्रस्ट केस
11		पवली मंदिर केस
12		मीटर केस
13		288/60 केस
14		बगीचा केस
15		ध्वज दंड केस
16	244/60	मामला
17		18 नवम्बर 1995 मालेगांव
18	2/1992	15 दिसम्बर 19 वाशिम केस
19		2 अगस्त 2006 हाईकोर्ट नागपुर
20		12 मार्च 2007 हाईकोर्ट नागपुर आर्डर

प्रबंध इतिहास

1. 1820 में भट्टारक पद्मनंदी इस संस्थान की व्यवस्थापक थे। इसी वर्ष प्रथमत/ श्वेताम्बर शिरपुर आये वे राजस्थान गुजरात से आये।

2. 1848 में श्वेताम्बर ने पोलकरों को प्रलोभन देकर चक्षु लगाये जिसका दिगम्बर के द्वारा विरोध करने पर पोलकरों ने भट्टाकर पद्मनंदी के साथ एग्रीमेंट किया कि हम दिगम्बरों की बिना अनुमति के चक्षु नहीं लगाने देंगे।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

✍ निर्यापक मुनि अभयसागरजी महाराज

संतशिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं ससंघ मंगल सान्निध्य में सतना (मध्यप्रदेश) नगर में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव भी 16 से 21 जनवरी, 2010 में सानन्द सम्पन्न हुआ था। वहाँ से नागौद होकर संघ का प्रवास देवेन्द्रनगर (पन्ना) में था। वहीं पर 27 जनवरी, 2010 को आहार चर्या के बाद ईर्यापथ भक्ति के पश्चात् आचार्यश्री जी ने मुझे (मुनि अभयसागर), मुनि श्री प्रभातसागर जी तथा मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज को बुलवाया, और धर्म प्रभावना एवं आरोग्यवर्धन की पुनीत भावना से उन्होंने तीनों मुनियों का एक उपसंघ तैयार किया। सामायिक के उपरान्त यथोचित निर्देश, मार्गदर्शन एवं मंगल शुभाशीष प्रदान कर आचार्य भगवन् ससंघ श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) की ओर गमन कर गये।

देवेन्द्रनगर, ककरहटी, गुनौर, सलेहा, श्रेयांसगिरि, सिंहपुर, बृजपुर, पन्ना, खजुराहो, राजनगर, छतरपुर, सटई, बिजावर, बड़ा मलहरा, हीरापुर आदि नगर व ग्रामों में शीतकाल एवं ग्रीष्मकाल के प्रवास के दौरान हम तीनों मुनिवृन्द धर्माराधना करते/कराते रहे। गुरुदेव से प्राप्त संकेतानुसार धर्मनगरी शाहगढ़ (सागर) में सन् 2010 का वर्षायोग स्व-पर कल्याण की भावना से सम्पन्न हुआ। चातुर्मास के उपरान्त आचार्य भगवन्त से प्राप्त निर्देशानुसार शाहगढ़ से जासोड़ा, किशनपुरा, बरायठा, गिरारजी, खुटगुवाँ, कारीटोरन, नवागढ़, पपौराजी, अहारजी, बलदेवगढ़ तथा भेलसी होते हुये शीतकालीन प्रवास हेतु हम तीनों मुनि टीकमगढ़ जिले में स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जी, जैन मुहल्ला खरगापुर पहुँचे।

शाम का समय होने के कारण सायंकालीन देववन्दना की भावना से जब उस जिनालय परिसर की प्रथम वेदिका में विराजित जिनबिम्ब के दर्शनार्थ पहुँचे, तब वहाँ पर गन्धकुटीगत तीन कटनियों के मध्य में स्थित जिनेन्द्र प्रभु के नयनाभिराम बिम्ब के दर्शन हुये। सामान्य रीति से दर्शन के दौरान जिनेन्द्र भगवान् की वीतराग मुद्रा की स्तुति-वन्दन किया। श्वेत वर्ण संगमरमरवाली, नौ सर्प फणावलियों से मण्डित, पद्मासनस्थ जिनबिम्ब को तेईसवें तीर्थंकर भगवान् श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा समझकर स्वयं-भू-स्तोत्र- गत- 'श्री पार्श्वनाथ स्तवन' को उच्चरित करने के उपरान्त, गवासन में बैठकर जिनबिम्ब की वन्दना कर उन्हें नमोऽस्तु निवेदित किया। दिन लगभग ढलने की ओर तत्पर था। कम प्रकाश होते हुये भी जब प्रतिमा जी पर अचानक ही दृष्टि गई तब जिनबिम्ब के पादपीठ पर उत्कीर्णित चिह्न अवलोकित हुआ। उसे देखकर आश्चर्यकारक भाव जाग्रत हुये। दिख रहे चिह्न पर आँखों को सहसा विश्वास-सा नहीं हुआ। सोचा क्या कम प्रकाश है, इस कारण ऐसा प्रतीत हो रहा है ? इसी बीच साथ में उपस्थित श्रावकों के द्वारा पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था हो जाने पर जो सामने दिख रहा था उसे मानने का मन नहीं हो रहा था। फिर भी जो दिख रहा है वह वैसा क्या है, क्यों है, उस तरफ दृष्टि गई। स्थानीय उपस्थित श्रावकों से पूछने पर सभी का उत्तर सहज रीति से एक समान ही था कि यह प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ जी भगवान् की है।

प्रतिमा जी पर उत्कीर्णित चिह्न अपनी कुछ अन्य ही कथा कह रहा था, जिस ओर सामान्य जनता की दृष्टि या ध्यान सभी गया ही नहीं था। गौर से देखने पर समझ में आया कि पादपीठ में स्थित है 'शंख का चिह्न'। जब श्री पार्श्वनाथ जी भगवान् के बिम्ब पर पूर्व पर्याय के भ्राता कमठ के जीव द्वारा वर्तमान में शंवर नामक ज्योतिषीय देव की अवस्था में किये गये उपसर्ग का प्रतीक चिह्न नौ सर्प फणावलियाँ बनी हुई। तब वहाँ पर 'शंख' के स्थान पर 'सर्प' वाली आकृति होना चाहिये थी। किन्तु इस बिम्ब पर श्री नेमिनाथ जी भगवान् का 'शंख' चिह्न क्यों बना है ? ऐसा प्रश्न उपस्थित सभी श्रावकों से पूछने पर भी उनके द्वारा उत्तर तब अनुत्तरित ही रहा।

जैन मुहल्ला, खरगापुर के उस श्री पार्श्वनाथ जी मंदिर परिसर में स्थित और अन्य जिन मंदिरों वेदिकाओं को लक्ष्य में रखकर भले ही कदम फिर आगे बढ़ गये। परन्तु जिज्ञासा प्रश्नों की शृंखलाएँ मन में प्रतिसमय बन ,उमड़ रहीं थीं। आज तक तो यही पढ़ा एवं सुना भी था कि श्री सुपार्श्वनाथ जी एवं श्री पार्श्वनाथ जी भगवंतों की प्रतिमाओं पर सर्प की फणावलियाँ बनी रहती हैं। मदनमहल जनरल स्टोर्स, राइट टाउन, जबलपुर (म.प्र.) से प्रकाशित सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् प्रो. बालचन्द्र जैन (उप संचालक- पुरातत्त्व एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश) की प्रसिद्ध कृति 'जैन प्रतिमा विज्ञान' 'प्रतिमा लक्षण सहित' (संस्करण 1974, पृष्ठ 18) के 'द्वितीय अध्याय' 'जैन मंदिर और प्रतिमायें' में एतद् विषयक एक विशिष्ट उल्लेख प्राप्त है। उसके अनुसार पद्मानन्द महाकाव्य (1/10) में कहा गया है कि श्री सुपार्श्वनाथ जी के मस्तक पर सर्प के पाँच फणों का छत्र बना होता है। साथ ही इसी पद्मानन्द महाकाव्य ग्रन्थ(1/26) में प्रतिपादित है कि श्री पार्श्वनाथ जी के मस्तक पर सात फणों वाले नाग का छत्र बना होता है। इस आधार से ऐसा माना जाता है कि जिस बिम्ब पर पाँच सर्प फण बने हुये हों वो सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी का होगा। इसके अतिरिक्त एक, तीन, सात, नौ, ग्यारह या उससे अधिक भले ही वो क्यों ना सहस्रफणयुक्त बिम्ब हो, वह तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी भगवान् का होगा। इस बात की पुष्टि के लिये सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक बी.सी. भट्टाचार्य की पुस्तक 'दि जैन आइकानोग्रॉफी' (लाहौर, 1939) का सन्दर्भ प्रायः कर सुना पढ़ा जाता है।

गहन अनुसंधान एवं गवेषणात्मक अनुशीलन कर 'उत्तरभारत में जैन प्रतिमा विज्ञान' विषय पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश से सन् 1977 में पी-एच-डी. उपाधि प्राप्तकर्ता तथा उसी विश्वविद्यालय के कला-इतिहास विभाग में पदस्थ व्याख्याता डॉ. मारुति नंदन प्रसाद तिवारी ने अत्यधिक लगन व श्रमसाध्य निष्ठा से 'जैन प्रतिमा विज्ञान' पुस्तक आलेखित की थी, जो पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी से सन् 1981ई. में प्रकाशित हुई थी।

डॉ. तिवारी ने 'जैन प्रतिमा विज्ञान' में दर्शाया है कि श्री पार्श्वनाथ की प्राचीनतम मूर्तियाँ ईसा पूर्व पहली शताब्दी की चौसा (भोजपुर, बिहार) तथा मथुरा (उ.प्र.) से प्राप्त हुई हैं। उनके अनुसार प्राचीनकाल में पीठिका पर पार्श्व के सर्प लांछन के उत्कीर्णन की परम्परा लोकप्रिय नहीं थी, परन्तु सिर के ऊपर सात सर्प फणों का छत्र सदैव प्रदर्शित किया गया है। हालाँकि जिनेन्द्र प्रभु के मंदिरों में दर्शन करते समय ऐसी भी अनेक जिन प्रतिमायें देखने में आयी हैं जिनमें से किसी पर एक, कहीं तीन तो फिर कहीं नौ, ग्यारह और उससे भी अधिक सैकड़ों/हजारों की संख्या में सर्प फण उत्कीर्ण होने से वे सभी श्री पार्श्वनाथ जी की ही प्रतिमायें मानी जानी जाती हैं। इनमें से किसी के पादपीठ पर सर्प लांछन /चिह्न बना है, किन्हीं में बिम्ब के पार्श्व भागों में सर्प उत्कीर्ण हैं तो किसी के उभय पार्श्व भागों में बने यक्ष एवं यक्षी आदि के मस्तक पर भी सर्प फण बना हुआ प्राप्त होता है। कहीं-कहीं पाँच फण सहित पार्श्वनाथ जिनबिम्ब नामोल्लेख के साथ भी दृष्टि पथ में अवलोकित हुआ हैं।

इन सभी बातों का स्मरण मन ही मन में अभी चल ही रहा था कि आगे विस्मयाभिभूत होने का पुनः प्रसंग सम्मुख आ गया। ग्राम खरगापुर के श्री पार्श्वनाथ जिनालय के ही परिसर में स्थित एक अन्य मंदिर की वेदिका में विराजित जिनबिम्बों का दर्शन करते हुये जब नौ सर्प फणों से मण्डित, श्वेत संगमरमरवाली, पद्मासनस्थ एक अन्य जिन प्रतिमा के पादपीठ पर उत्कीर्णित 'अर्धचन्द्र' चिह्न अवलोकित हुआ, तब आश्चर्य अपनी पराकाष्ठा को छूने लगा। ऐसा कैसे एवं क्यों है, यह जानने/समझने के लिये मन आतुर हो रहा था। इस ग्राम के शीतकालीन प्रवास काल में समाज द्वारा आयोजित श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का समायोजन हुआ था। उस प्रसंग पर ख्यातिलब्ध सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' -टीकमगढ़, पं. बाबूलाल जैन- टीकमगढ़, बा. ब्र. पं. जयकुमार 'निशांत' - टीकमगढ़, बा. ब्र. पं. नितिन जैन-खुरई आदि लगभग 11 प्रतिष्ठा एवं विधि-विधान में निष्णात मनीषी वहाँ पर समागत हुये थे। इनके अतिरिक्त समय-समय पर पं. विमलकुमार सौंरया एवं पं. वर्धमान सौंरया-टीकमगढ़, पं. सनतकुमार जैन एवं पं. विनोदकुमार जैन- रजवांस आदि से भी इन जिनबिम्बों के पादपीठ पर सर्प फणावलियों से युक्त सुपार्श्वनाथ जी या पार्श्वनाथ जी का चिह्न, क्रमशः स्वस्तिक या सर्प नहीं बनाकर, उनके स्थान पर नेमिनाथ जी का लांछन 'शंख' तथा चन्द्रप्रभ जी का 'अर्ध चन्द्र' चिह्न का अंकन क्यों किया गया है - एतद् विषयक गहन विचार-विमर्श किया, किन्तु समाधानकारक जानकारी/तथ्य मिलना अभी शेष ही रहा। इस कारण तब से जिनालयों में सर्प फणावलियों युक्त जिनबिम्बों का जब भी दर्शन होता है तो उन पर सर्प चिह्न उत्कीर्ण है या कुछ और कोई भिन्न चिह्न है - यह देखने को मन उत्सुक रहता है। और इसी के प्रतिफलस्वरूप इस शोध/खोज यात्रा ने सन् 2010 से अद्यतन तक ऐसे अनेक, अद्भुत एवं आश्चर्यकारी जिनबिंबों को खोज लिया, जो समाज के बीच में होते हुये भी प्रायः कर उस ओर किन्हीं का भी ध्यान आकृष्ट नहीं हो रहा /पाया था। ऐसे ही कुछ जिनबिम्बों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देवगढ़, जिला-ललितपुर, उत्तरप्रदेश में पर्वत के ऊपर स्थित 22 नंबर 'अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय' में देशी बलुआ पत्थर पर कायोत्सर्गस्थ, सप्त सर्प फणावलियों से सहित जिनबिम्ब है, किन्तु उसके पादपीठ पर चिह्न प्रथम तीर्थंकर भगवान् श्री ऋषभदेव का बैठा हुआ वृषभ यानी नंदी/नांदिया साँड़ (बैल नहीं) अंकित है (चित्र क्र. 1) ।

2. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गोपालगंज, सागर, मध्यप्रदेश में सफेद संगमरमर की 5 सर्प फणावलियों से युक्त पद्मासनस्थ जिनबिम्ब विराजित है। इस पर भी 'वृषभ' का लांछन बना हुआ है (चित्र क्र.2)।

3. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, पपौरा चौराहा के निकट, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में काले संगमरमर में पद्मासनस्थ, नौ सर्प फणावलियों वाला जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर बैठा हुआ 'हाथी' चिह्नित हुआ है (चित्र क्र. 3)।

4. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अटा मंदिर, सावरकर चौक, ललितपुर, उत्तरप्रदेश में प्रवेश करते ही नीचे ग्राउंड फ्लोर पर स्थित गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान् वाली वेदिका पर एक काँच की पेटी रखी हुई है। उसमें अष्टधातु, पीतलधातु से निर्मित, पद्मासनस्थ, नौ सर्प फणावली से सहित जिनबिंब है, जिसके पादपीठ पर खड़ा हुआ तथा सूँड/शुंड उठाये हुये 'हाथी' 'गज' दिग्दर्शित होता है (चित्र क्र. 4)।

5. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बरियावाला के नन्हें जैन मंदिर के पास, हनुमानताल जबलपुर, मध्यप्रदेश में ऊपरी मंजिल पर स्थित, द्वितीय वेदिका पर सफेद संगमरमर का पद्मासनस्थ एवं नौ सर्प फणावलियों से युक्त जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर ऊपर की ओर सूँड/शुंड उठाये हुये 'हाथी' खड़ा हुआ दिखता है (चित्र क्र. 5)।

6. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, पुराना बाजार, मालथौन, जिला- सागर, मध्यप्रदेश में प्रवेश करते ही बायीं ओर निर्मित वेदिका पर सफेद संगमरमर की सप्त सर्प फणावली युक्त एक कायोत्सर्गस्थ जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर नीचे चिह्न के स्थान पर, 'बन्दर', अथवा 'सिंह' जैसी आकृति बनी हुई है। साथ ही उसी फलक पर अन्य चार कायोत्सर्गस्थ जिनबिम्ब और भी हैं। उनमें से नीचे दोनों ओर एक-एक चिह्न रहित जिनबिम्ब हैं तथा उनके ऊपर 5-5 सर्प फणावलियाँ सहित जिनबिम्ब हैं। इस प्रकार एक ही फलक पर एक साथ पाँच जिन प्रतिमाओं के दर्शन हो जाते हैं। (चित्र क्र. 6)।

7. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देवगढ़, जिला- ललितपुर, उत्तरप्रदेश में पर्वत पर स्थित 22 नंबर जिनालयगत अनुपम त्रिमूर्तियों में देशी बलुआ पाषाण से निर्मित कायोत्सर्गस्थ, सात सर्प फणावलियों सहित जिन प्रतिमा है। इसके चरणों के निकट दोनों ओर एक-एक हाथ जोड़कर प्रणति निवेदित करती हुई दो आकृतियाँ भी दृष्टिगोचर हो रही हैं। उसके पादपीठ पर 'चकवा पक्षी' के चिह्न युक्त यह प्रतिमा है (चित्र क्र.7)।

8. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कुण्डलगिरि- कोनी जी, तहसील-पाटन, जिला-जबलपुर, मध्यप्रदेश में मन्दिर क्र. 5 क्षेत्र का मूलनायक जिनालय है। उसमें मूलनायक भगवान् के रूप में मस्तक पर 7 सर्प फणावलियों से युक्त, सफेद संगमरमर वाला एक पद्मासनस्थ जिनबिम्ब है। उसके पादपीठ पर चार पाँखुड़ी वाला 'पुष्प कमल' का चिह्न प्रदर्शित होता है। (चित्र क्र. 8) ।

9. श्री अभिनन्दननाथ दिगम्बर जैन मंदिर, ग्राम-गूडर, तहसील-खनियाधाना, जिला-शिवपुरी, मध्यप्रदेश में अष्टधातु/पीतलधातु से निर्मित नौ सर्प फणावलियों वाला एक पद्मासनस्थ जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर महावत सहित द्वय हाथियों के मध्य 'अर्ध चन्द्र' चिह्न वाली प्रतिमा है। (चित्र क्र. 9)।

10. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बाहुबलीनगर, ललितपुर, उत्तरप्रदेश में स्थित सफेद संगमरमरवाला तथा सप्त सर्फ फणावलियों से वेष्टित, पद्मासनस्थ जिनबिम्ब विराजित है जिसके पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' चिह्न निर्मित है (चित्र क्र. 10)।

11. उपर्युक्त जिन मंदिर में ही सफेद संगमरमर की एवं सप्त सर्प फणावलियों से युक्त एक अन्य पद्मासनस्थ जिनबिम्ब और भी है। ये दोनों की आकृतियों में परस्पर बहुत कुछ एकरूपता है, किन्तु बायें हाथ के अँगूठे की मुद्रा से दोनों में भिन्नता स्पष्टतया परिलक्षित हो जाती है। उसके पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' लांछन बना हुआ है (चित्र क्र. 11)

12. विक्रम संवत् 1548 (सन् 1491 ईसवी) में जीवराज पापड़ीवाल श्रावक के द्वारा भट्टारक श्री जिनचन्द्र जी के सान्निध्य में मुड़ासा नगर में रावल स्योसिंह के राज्यकाल में प्रतिष्ठापित यह जिन-प्रतिमा सफेद संगमरमर की पद्मासनस्थ है। सप्त सर्प फणावलियों से अभिमण्डित तथा पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' चिह्न सहित है। स्थान का नाम स्मृतिपटल में नहीं आ रहा है (चित्र क्र. 12) ।

13. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, गाँधी रोड मुंगावली, जिला-अशोकनगर, मध्यप्रदेश में अष्टधातु-पीतल धातु से निर्मित, पद्मासनस्थ, जिन प्रतिमा पर सप्त सर्प फणावलियाँ बनी हुई हैं। इसके पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' का चिह्न अंकित दिख रहा है (चित्र क्र. 13)।

14. उपर्युक्त जिनालय में ही अष्ट धातु/पीतल धातु से निर्मित, पद्मासनस्थ, ग्यारह सर्प फणों से युक्त एक अन्य जिनबिम्ब भी विराजित है। उसके पादपीठ पर धुँधली आकृति में 'अर्ध चन्द्र' दृष्टिगोचर होता है (चित्र क्र. 14)।

15. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, जैन मुहल्ला, खरगापुर, जिला-टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में वि. सं. 1548 में प्रतिष्ठापित सफेद संगमरमर की नौ सर्प फणावलियों युक्त जिन प्रतिमा है। उसके पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' का चिह्न अंकित हुआ है (चित्र क्र. 15)।

16. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सेठ मंदिर, पटेरा (दमोह) मध्यप्रदेश में काले संगमरमर वाली

एक पद्मासनस्थ, सप्त सर्प फणयुक्त प्रतिमा स्थापित है। उसके पादपीठ पर खड़ी हुई आकृति वाला पशु (संभवतः भैंसा) दृष्टिगोचर होता है (चित्र क्र. 16)।

17. श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, छोटी बाजार, झण्डा चौक, बाँदा, उत्तरप्रदेश में मूंगा वर्ण युक्त, पद्मासनस्थ जिनबिम्ब विराजित है। उसके पादपीठ पर 'बकरा' (छाग/अज) का चिह्न स्पष्टतः दिख रहा है जबकि प्रतिमा के मस्तक पर नौ सर्फ फणावलियाँ विद्यमान हैं (चित्र क्र. 17)।

18. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सदर बाजार, झाँसी, उत्तरप्रदेश में विराजित श्वेत संगमरमरवाली, पद्मासनस्थ जिन प्रतिमा है। सप्त सर्प फणों से अभिमण्डित उस जिन प्रतिमा के पादपीठ पर 'मछली' (मीन/मत्स्य) का चिह्न अवलोकित होता है (चित्र क्र. 18)।

19. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बामोर कलाँ (बड़ी बामौर)- तहसील, खनियाधाना- जिला शिवपुरी- मध्यप्रदेश में श्वेत संगमरमरमयी, सप्त सर्प फणयुक्त जिनबिम्ब विराजित है। उसके पादपीठ पर चिह्न के स्थान पर एक गोलाकार संरचना (संभवतः घड़ा/घट का अपूर्ण रूप) निर्मित है तथा उसके चिह्न का कुछ अंश प्रतिमा के पाद स्थान पर व्हाइट सीमेंट लगी होने से चूँकि वह सूख गयी है। फलतः उसके कार ण स्थिर पूर्णतया अस्पष्टता का बोधक हो गया है (चित्र क्र. 19)।

20. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर खनियाधाना, जिला- शिवपुरी, मध्यप्रदेश में श्वेत संगमरमर से युक्त, पद्मासनस्थ जिनबिम्ब विराजित है। फोटो में सर्प फण कटे हुये होने से, उनकी सही गणना नहीं की जा सकी, किन्तु नीचे से सात सर्प फणों का गिना जाना सहज संभव हो सका है उसके पादपीठ पर 'कछुआ' (कूर्म/कच्छप) जैसी- आकृति चिह्नांकित हुई है (चित्र क्र. 20)।

21. श्री अजितनाथ दिगम्बर जैन बड़ा चौबीसी मंदिर, चंदेरी, जिला अशोकनगर, मध्यप्रदेश में पद्मासनस्थ, काले संगमरमर का मनोज्ञ सहस्रफणी जिनबिम्ब विराजित है। उसके पादपीठ पर 'कछुआ' का चिह्न अंकित है (चित्र क्र. 21)।

22. उपर्युक्त जिनालय की एक अन्य वेदिका पर श्वेत संगमरमर से निर्मित एक भिन्न/अन्य पद्मासनस्थ, सहस्रफणी जिनबिम्ब विराजित है। उस पर भी स्पष्टतः 'कछुआ/कच्छप' का चिह्न कुछ अलग ही रूप से उत्कीर्णित हुआ दिखाई दे रहा है (चित्र क्र. 22)।

23. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चाँदखेड़ी- खानपुर, जिला- झालावाड़, राजस्थान में ऊपरी तल पर स्थित कोने वाली वेदिका पर काले संगमरमर से निर्मित, पद्मासनस्थ जिनबिंब स्थापित है। उसके मस्तक पर सप्त सर्प फणों का छत्र निर्मित है जबकि नीचे उसके पादपीठ पर 'कछुआ' का चिह्न बना हुआ है (चित्र क्र. 23)।

24. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, जैन मुहल्ला, ग्राम -खरगापुर, जिला- टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में परिसरस्थ प्रथम वेदिका स्वरूप गंधकुटी संरचना में सफेद संगमरमर वाली तथा नौ सर्प फणों से मण्डित पद्मासनस्थ जिनबिंब है। उसके पादपीठ पर स्पष्टतः 'शंख' चिह्न दृष्टिगोचर होता है (चित्र क्र. 24)।

25. श्री महावीर दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र मंगलगिरि, बाघराज वार्ड, धर्मश्री रोड, अम्बेडकर मार्ग, सागर, मध्यप्रदेश में काले संगमरमर पर पाँच सर्प फणावलियों से युक्त कायोत्सर्गस्थ जिनबिंब है। उसके पादपीठ पर 'सिंह' का चिह्न स्पष्टतः झलक रहा है (चित्र क्र. 25)।

26. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, हनुमानताल, जबलपुर, मध्यप्रदेश में ऊपरी तल के अंतिम भाग में सफेद संगमरमर से निर्मित, कायोत्सर्गस्थ, पाँच सर्प फणावली से युक्त जिनबिंब है। उसके पादपीठ के स्थान पर जहाँ ऊपर 'सिंह' का चिह्न अंकित है, वहीं उससे कुछ नीचे की ओर 'सर्प' का चिह्न भी दृष्टिगोचर हो रहा है (चित्र क्र. 26)।

27. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देवगढ़, जिला-ललितपुर, उत्तरप्रदेश के पर्वत पर स्थित मंदिर क्र. 22 में त्रय जिनबिम्बों के रूप में अनुपम त्रिमूर्तियाँ विराजित हैं। उनमें से मध्य भाग में कायोत्सर्गस्थ मुद्रा में ध्यानस्थ जिनबिम्ब के मस्तक या पादपीठ पर नहीं, बल्कि दोनों ही पार्श्व भागों में तीन-तीन फणों वाले 'सर्पों' का अंकन प्राप्त हो रहा है (चित्र क्र. 27)।

दिगम्बर जैन परम्परा के अनेक आचार्य भगवन्तों-साधु-संतों, आर्यिकाओं, साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक अभिरुचिवंत विद्वानों, धार्मिक विधि-विधानकर्त्ताओं तथा पंचकल्याण प्रतिष्ठाविधि में पारंगत अनेक प्रतिष्ठाचार्यों से उपर्युक्त जिन प्रतिमाओं के चिह्नों का अवलोकन पूर्वक परामर्श किया/कराया गया/ किन्तु आशाजनक या संतुष्टिप्रद समाधान प्राप्त नहीं हो सका।

एक बार सागर जिला-मध्यप्रदेश में रेल्वे जंक्शन के लिये सुप्रसिद्ध बीना नगर में स्थित श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर, इटावा की ऊपरी मंजिल के छोर पर सिंघई जी वाली वेदिका पर विराजित जिनेन्द्र प्रभु की वीतराग मुद्रा वाले अनेक जिनबिम्बों का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। भले ही उसमें विराजित प्रासंगिक जिनबिम्ब श्री पार्श्वनाथ भगवान् का नहीं था, अतः उस पर सर्प फणों का अंग भी नहीं हुआ था किंतु प्रतिमा के पादपीठ पर स्थित अंकित चिह्नों ने मेरी शोध या खोज यात्रा को एक निश्चित पड़ाव तक पहुँचा दिया था।

ध्यान से देखने पर समझ में आया कि प्राथमिक दशा में उस काले संगमरमर वाली, पद्मासनस्थ प्रतिमा के पादपीठ पर 'अर्ध चन्द्र' का चिह्न बना हुआ दिख रहा है, परंतु गौर करने पर एक महत्त्वपूर्ण रहस्य और भी उद्घाटित हुआ। 'इस प्रतिमा पर निर्मित' अंकित 'अर्ध चन्द्र' चिह्न को हटाये/ मिटाये बिना ही उस पर दूसरा 'हाथी/गज' का चिह्न भी अंकित किया हुआ पाया जा रहा है। इसका क्या कारण होना चाहिये? इस विषय पर गंभीर रूप से चिन्तन/मंथन करने पर आखिर कारण समझ में आ ही गया।

उक्त जिनबिम्ब (चित्र क्र. 28) की प्रतिमा को बनवाकर मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाने की इच्छा वाले श्रावक ने मूर्ति निर्माणकर्त्ता शिल्पी से बिम्ब/मूर्ति पर अपने इष्ट देवाधिदेव श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के 'अर्ध चन्द्र' का चिह्न अंकित करवाकर तथा उसे लेकर अपने ग्राम लाये होंगे। फिर पंचकल्याणक प्रतिठा करवाने हेतु उस मूर्ति को लेकर प्रतिष्ठाचार्य महोदय के सम्मुख पहुँचे होंगे। सामान्यतया प्रतिष्ठाचार्य या उनके सहयोगी मूर्ति के अंग-विन्यास पर दृष्टिपात करके प्रतिष्ठा के योग्य या अयोग्यता का निर्धारण कर देते हैं। किंतु किसी विशिष्ट प्रयोजन होने पर तत्सम्बन्धी गहन छानबीन, खोजबीन भी प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा की जा सकती है। इसी कारण प्रतिष्ठाचार्य ने ज्योतिषीय दृष्टि को लक्ष्य में रखकर उस मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाने वाले का नाम तथा जिस ग्राम या नगर में उसे विराजित किया जाना हो उसका भी नाम पूछा होगा। दोनों का नाम ज्ञात होने पर ज्योतिषीय परिगणना के आधार से प्रतिष्ठापक एवं प्रतिष्ठित होकर जिस नगर में उसे विराजमान किया जाना था। उन दोनों ही नाम राशियों का श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की नाम राशि से मिलान करने पर प्रशस्तता, श्रेष्ठता परिलक्षित नहीं हुई। अतः उन्होंने श्री चन्द्रप्रभ भगवान् के स्थान पर किन्हीं अन्य तीर्थंकर भगवान् का बिम्ब विराजमान करने का सत्परामर्श प्रदान किया होगा। सामान्य रीति से चौबीसों ही भगवान् हम सभी के लिये आराध्य होने से पूज्य हैं। उनमें से अपने इष्ट रूप किन्हीं भी भगवान् का बिम्ब प्रतिष्ठापित करवाकर विराजमान किया/कराया जा सकता है। किन्तु ज्योतिषीय परिगणना, कुण्डलीय परीक्षण करके स्थापना किया जाना भी एक विशिष्ट प्रयास होता है, जिसकी अपनी विशिष्ट पहचान व सार्थकता होती है।

प्रतिष्ठापक के द्वारा जब किसी अन्य नये जिनबिम्ब को लाने में असमर्थता प्रकट की गई होगी और इसी मूर्ति को ही विराजमान करने की मनोभावना रखी होगी। तब ऐसी परिस्थिति में प्रतिष्ठाचार्य ने ज्योतिषीय दृष्टि से वर्ग विचार, कांकणी विचार, ग्रह मैत्री, नवांश मैत्री आदि को दृष्टि में रखकर प्रतिष्ठापक का नाम तथा ग्राम/ नगर के नाम के आधार पर तीर्थंकर भगवान् की नाम राशि को भी ध्यान में रखकर गणना की होगी। इसके कार्य को करने के लिये वर्तमान समय में डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन (पठा वाले, आरोग्य मंदिरम्, कटरा बाजार, टीकमगढ़ 472001, मध्यप्रदेश,मो. 87700-40624) ने अथक परिश्रम करके 'ज्योतिष सार संग्रह' संज्ञक कृति में 'तीर्थंकर नवांश सारणी' तैयार की है। इसमें द्वादश राशियों के अंतर्गत 27 नक्षत्रों के नवांशों के आधार से प्रतिष्ठापक एवं जिस नगर/ग्राम में प्रतिमा विराजमान की जानी हो, उनके आधार से 24 तीर्थंकरों में से सर्वोत्तम, उत्तम एवं सामान्य भगवान् का चयन करने हेतु उक्त सारणी तैयार की है।इसके आधार से कुछ क्षणों के भीतर ही गणना करके जैसे अभी तीर्थंकर भगवान् का निर्धारण कर लेना अब सुगम हो गया है उसी प्रकार ज्योतिष विद्या में निष्णात प्रतिष्ठाचार्यों ने भी तत्समय उपलब्ध ज्योतिष विषयक जानकारियों के आधार से निर्णय किया होगा। बीना नगर में विराजित उक्त जिनबिम्ब को प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा प्रतिष्ठापक एवं उनको विराजमान किये जाने वाले नगर, ग्राम के नाम के आधार से श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रतिष्ठा कराना उचित न मानकर, ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी भगवान् के नाम को निर्धारित किया होगा। फलतः मूर्ति पर अंकित 'अर्ध चन्द्र' के ऊपर ही (उसे मिटाये/घिसे जाये बिना) 'गज/हाथी' का चिह्न उत्कीर्णित करवाकर उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई गई होगी। अतः श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर, इटावा बीना, सागर मध्यप्रदेश में विराजित श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के 'अर्ध चन्द्र' चिह्न के स्थान पर श्री अजितनाथ जी के 'गज/हाथी' चिह्न का अंकन करवा कर दोनों ही एक साथ होने से श्री सुपार्श्वनाथ जी के पाँच सर्प फण या श्री पार्श्वनाथ जी के तीन, सात, नौ, ग्यारह अथवा सहस्र फणों के होते हुये भी उन जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्णित भिन्न-भिन्न चिह्नों का रहस्य तब उद्घाटित होने से चिन्तन को एक नया आयाम मिला।

बीना (सागर) म.प्र. के इटावा मुहल्ला में स्थित श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर की उपरिल मंजिल पर स्थित सिंघई जी वाली वेदिका पर विराजित श्री अजितनाथ जी की प्रतिमा पर उत्कीर्णित दो चिह्नों के समान ही श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, रावरपुरा, ललितपुर, उत्तरप्रदेश में जब पद्मासनस्थ, श्वेत संगमरमर से निर्मित जिनबिम्ब के दर्शन किये (चित्र क्र. 29), तब बीना के मंदिर की उक्त प्रतिमा के दो चिह्नों का प्रसंग स्मृति पटल पर पुनः उभर कर आ गया। ललितपुर के इस जिनालय में विराजित उस जिनबिम्ब पर भी दो चिह्न एक साथ उत्कीर्णित दिख रहे हैं। वहाँ पर स्थित उस जिन प्रतिमा पर मूलतः 'अर्ध चन्द्र' चिह्नअंकित रहा होगा, किन्तु उसमें भी 'अर्ध चन्द्र' चिह्न के ऊपर (चिह्न को हटाये/घिसे जाये बिना) 'मकर/मगरमच्छ' का चिह्न भी अंकित मिला। एक ही प्रतिमा पर पुनः दो चिह्नों का बनाया जाना उपर्युक्त प्रकार की ज्योतिषीय अवधारणा ही को परिपुष्ट करा गया, क्योंकि प्रतिष्ठापक एवं प्रतिष्ठोपरान्त ललितपुर नगर में उस जिनबिम्ब को विराजमान करने की भावना को दृष्टि में रखा गया होगा। फिर इन दोनों नामों का श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के राशि नाम से युति बैठाये जाने का प्रयास करने पर जब श्रेष्ठ युति नहीं बैठी होगी। तब 'अर्ध चन्द्र' चिह्न के ऊपर ही श्री पुष्पदंतनाथ जी/श्री सुविधिनाथ जी भगवान् के चिह्न 'मकर/मगरमच्छ' का अंकन किया जाना भी एक श्रेष्ठ उपाय प्रतीत हुआ होगा।

उसी प्रकार से जबलपुर नगर के हनुमानताल में स्थित विशाल पार्श्वनाथ जिनालय की उपरिल मंजिल पर एक फलक में कायोत्सर्गस्थ, पाँच फणयुक्त भगवान् के साथ चार अन्य जिनबिम्ब मानों पंच बालयति का द्योतन करा रहे हैं। उसके पादपीठ पर नीचे जहाँ सर्प का चिह्न बना हुआ है, वहीं उसके कुछ ऊपर सिंह का अंकन होने से एक ही प्रतिमा में दो-दो चिह्न बने हुये दिख रहे हैं (चित्र क्र. 26)। अतः एक ही प्रतिमा में दो चिह्नों के होने से एक का निषेध कर, दूसरे का विधान किये जाने का संकेत प्राप्त हो रहा है।

इन तीनों दृष्टान्तों के परिप्रेक्ष्य में यह बात तब भलीभाँति समझ में आ गई है कि भले ही श्री सुपार्श्वनाथ जी अथवा श्री पार्श्वनाथ जी भगवानों के प्रति अनन्य आस्थावान् श्रावकजन अपने आराध्य की प्रतिमा निर्माण कराकर तथा उस पर यथेच्छ सर्प फणावलियाँ का अंकन भी करवाकर फिर मूर्ति को लेकर/बनवाकर आये होंगे। किन्तु जब ज्योतिषीय गणनाओं के कारण इन भगवंतों की नाम राशि का प्रतिष्ठा करवाने वाले तथा जिस नगर/ग्राम के जिनालय में उस बिम्ब को विराजमान किया जाना हो तब इन दोनों का मिलान करने पर उचित युति नहीं बैठी होगी। तब प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा प्रदत्त योग्य व उचित परामर्श के अनुसार भले ही प्रतिमा के मस्तक पर ऊपर पाँच या सात आदि सर्प फणावलियाँ बनी हुईं हों तथापि उन फणावलियों को (हटाये/मिटाये/नष्ट किये बिना) बने रहने दिया गया होगा, और जिन प्रतिमा के नीचे पादपीठ पर जिन भी तीर्थंकर भगवंत से प्रतिष्ठापक/नगर की नाम राशियों का उचित मिलान हुआ होगा। उनका चिह्न पादपीठ पर खुदवाकर प्रतिष्ठा करा ली गई होगी। और प्रतिष्ठा के उपरांत श्रीजी की प्रतिमा को नगर में स्थित जिनालय में विराजित किया गया होगा।

इसी कारण उपर्युक्त उल्लिखित विविध प्रकार की संख्यावाली सर्प फणावलियों को मस्तक के ऊपर बनी देखकर उन्हें श्री सुपार्श्वनाथ जी या श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा मान बैठना दर्शनार्थी की बहुत बड़ी भूल मानी जायेगी। इसलिये पूर्व वर्णित क्रमांक 1 से 26 तक के जिनबिम्ब श्री पार्श्वनाथ जी के नहीं माने जायेंगे, अपितु सर्प फणावलियों को गौणकर, उनके पादपीठ पर उत्कीर्णित चिह्न को जानकर/ देखकर तीर्थंकर का नाम जानें/पहचानें। अतएव उपर्युक्त जिनबिम्बों को क्रमशः इस प्रकार माना जाना चाहिये - 1. श्री ऋषभनाथ जी (देवगढ़), 2. श्री वृषभनाथ जी (गोपालगंज, सागर), 3. श्री अजितनाथ जी (बड़ा मंदिर, टीकमगढ़), 4. श्री अजितनाथ जी (अटा मंदिर, ललितपुर), 5. श्री अजितनाथ जी (बरियावाला मंदिर, जबलपुर), 6. श्री अभिनंदननाथ जी (श्री वर्धमान स्वामी जी मालथौन), 7. श्री सुमतिनाथ जी (देवगढ़), 8. श्री पद्मप्रभ जी श्री नमिनाथ जी (कोनीजी पाटन), 9. श्री चन्द्रप्रभ जी (गूडर), 10. श्री चन्द्रप्रभ जी (बाहुबली,नगर, ललितपुर), 11. श्री चन्द्रप्रभ जी (बाहुबली नगर ललितपुर), 12. श्री चन्द्रप्रभ जी (अज्ञात स्थान), 13. श्री चन्द्रप्रभ जी (मुंगावली), 14. श्री चन्द्रप्रभ श्री (मुंगावली), 15. श्री चन्द्रप्रभ जी (खरगापुर), 16. श्री वासुपूज्य जी (पटेरा), 17. श्री कुंथुनाथ जी (बांदा), 18. श्री अरनाथ जी (झाँसी), 19. श्री मल्लिनाथ जी (बामौरकलाँ), 20. श्री मुनि सुव्रतनाथ जी (खनियाधानाँ),, 21 श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (चंदेरी) 22. श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (चंदेरी) 23. श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (चांदखेड़ी) 24. श्री नेमिनाथ जी (खरगापुर) 25. श्री वर्धमान महावीर स्वामी जी (मंगलगिरि सागर) 26. श्री वर्धमान स्वामीजी / श्रीपार्श्वनाथ जी (हनुमानताल, जबलपुर) 27. श्री पार्श्वनाथ जी (देवगढ़) तथा श्री पार्श्वनाथ जी के अतिरिक्त 28. श्री अजितनाथ जी (बीना) एवं 29. श्री सुविधिनाथ जी (ललितपुर)।

इस प्रकार श्री सुपार्श्वनाथ जी या श्री पार्श्वनाथ जी के जिनबिम्बों को लक्ष्य में रखकर उनके मस्तक पर विविध संख्यावाली सर्प फणावलियों को भले ही शिल्पकार ने अंकित/उत्कीर्णित किया हो, किंतु अब भूल से या गलती से भी उनको 7वें या 23वें तीर्थंकर की प्रतिमा मान लेना हमारी भूल या लापरवाही या अज्ञानता को ही दिग्दर्शित करा सकती है। अतएव उनकी सही पहचान पादपीठ पर अंकित चिह्न आदि को देखकर निर्धारण करना समीचीन एवं तथ्यात्मक माना जायेगा।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय, देवगढ़ (ललितपुर) उत्तरप्रदेश

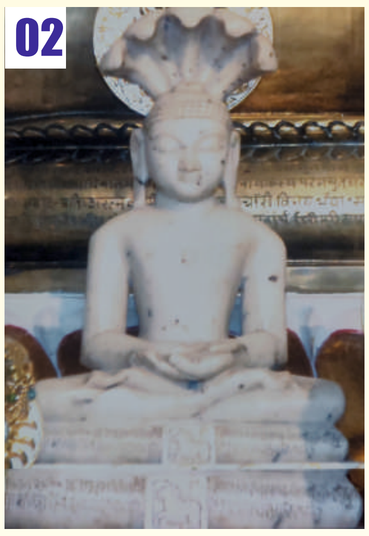

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर गोपालगंज, सागर (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन, बड़ा मंदिर टीकमगढ़ (म.प्र.)

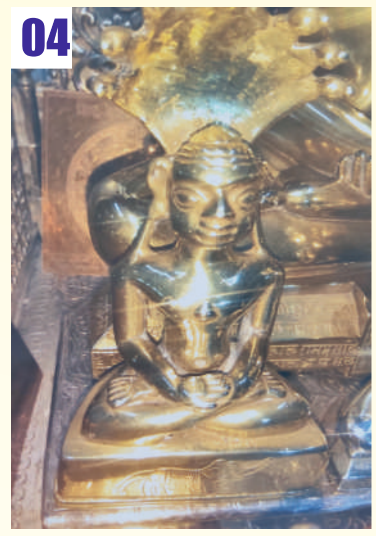

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अटा मंदिर सावरकर चौक ललितपुर (उ.प्र.)

श्री दिगम्बर जैन मंदिर बरियाबाला छोटे जैन मंदिर के पास, हनुमानताल, जबलपुर (म.प्र.)

श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, पुराना बाजार मालथौन, सागर (म.प्र.)

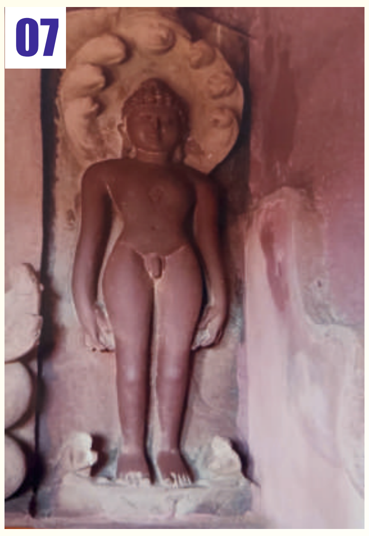

अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय देवगढ़ ललितपुर, (उ.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कोनीजी (पाटन) जबलपुर म.प्र.

श्री अभिनंदननाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गूडर, खनियाधाना, शिवपुरी (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर , बाहुबलीनगर, ललितपुर (उ.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर बाहुबलीनगर ललितपुर (उ.प्र.)

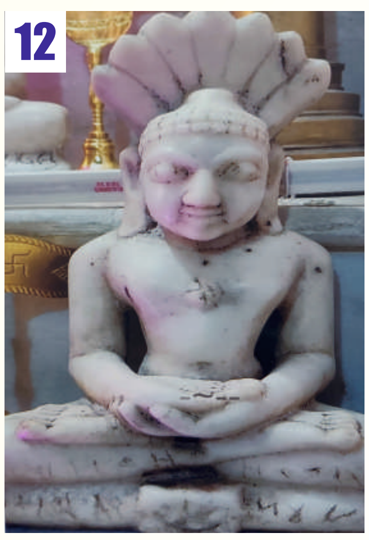

स्थान अज्ञात

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मुंगावली, अशोकनगर (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, मुंगावली, अशोकनगर (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, खरगापुर, टीकमगढ़ (म.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन सेठ मंदिर पटेरा दमोह (म.प्र.)

श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर, छोटी बाजार, झंडा चौक, बांदा, (उ.प्र.)

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, सदर, झाँसी (उ.प्र.)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, बामोरकलाँ, शिवपुरी (म.प्र.)

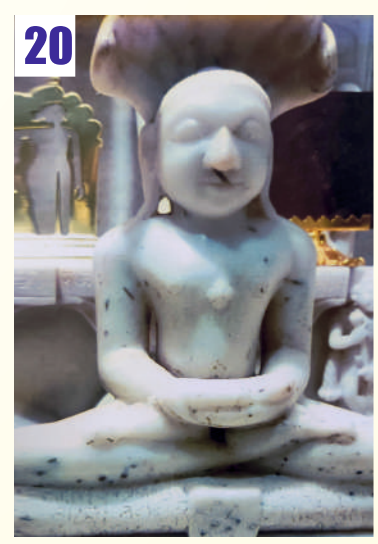

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, खनियाधाना, शिवपुरी (म.प्र.)

श्री अजितनाथ दिगम्बर जैन चौबीसी जिनालय, चंदेरी, अशोकनगर (म.प्र.)

श्री अजितनाथ दिगम्बर जैन चौबीसी जिनालय, चंदेरी, अशोकनगर (म.प्र.)

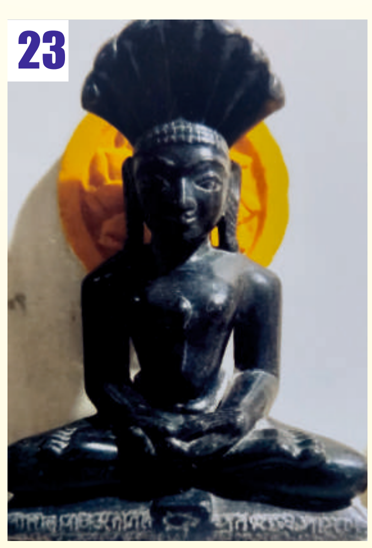

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी-खानपुर, झालावाड़ (राजस्थान)

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, खरगापुर, टीकमगढ़ (म.प्र.)

श्री दिगंबर जैन मंदिर, मंगलगिरि, सागर (म.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

26

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, हनुमानताल, जबलपुर (म.प्र.)

27

अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय, देवगढ़ ललितपुर (उ.प्र.)

28

श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर , ललितपुर (उ.प्र.)

29

श्री दिगंबर जैन मंदिर, सिंघई जी की वेदी इटावा, बीना, सागर (म.प्र.)

30

श्री दिगंबर जैन मंदिर, मोहनगढ, टीकमगढ़ (म.प्र.)

31

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन प्राचीन मंदिर खुरई, सागर, (म.प्र.)

32

श्री दिगंबर जैन मंदिर मोहनगढ़, टीकमगढ़ (म.प्र.)

33

श्री दिगंबर जैन मंदिर मोहनगढ़, टीकमगढ, (म.प्र.)

34

श्री दिगंबर जैन मूर्ति संग्रहालय, सिरोन जी, ललितपुर (उ.प्र.)

35

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अन्देश्वर पार्श्वनाथ, बांसवाड़ा (राजस्थान)

36

श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर, बीजापुर विजयपुरा (कर्नाटक)

37

श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ भगवान, श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, रहली पटनागंज, सागर

38

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पहाड़ मंदिर एलोरा-वेरुल, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

39

स्थान अज्ञात

40

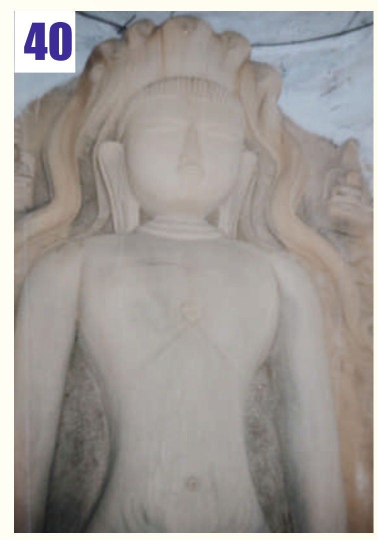

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, थूबोन जी, अशोकनगर (म.प्र.)

41

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, हुम्चा पद्मावती, शिमोगा (कर्नाटक)

42

श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, महुवा सूरत (गुजरात)

43

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कोनी जी पाटन, जबलपुर, (म.प्र.)

44

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र जिंतूर, परभणी (महाराष्ट्र)

45

स्थान अज्ञात

46

स्थान अज्ञात

47

48

49

श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा जी नासिक (महाराष्ट्र)

50

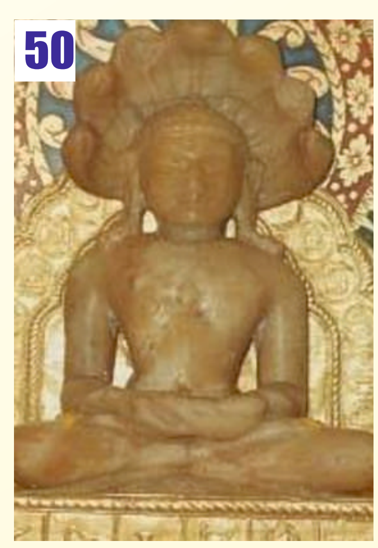

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर (महाराष्ट्र)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

51

52

श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिर
जिला छतरपुर (म.प्र.)

53

54

55

56

57

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
शहपुरा भिटोनी, जबलपुर (म.प्र.)

58

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
नसियाजी, शहपुरा भिटोनी जबलपुर (म.प्र.)

59

60

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

61

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

62

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

63

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

64
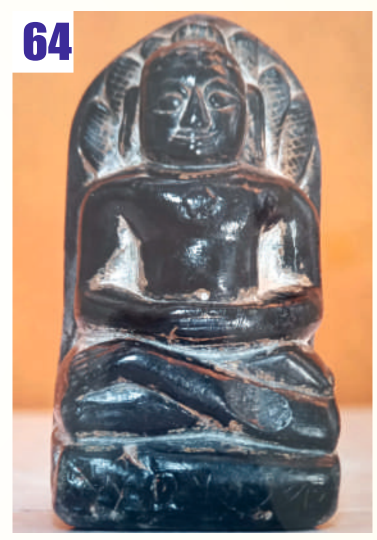
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

65
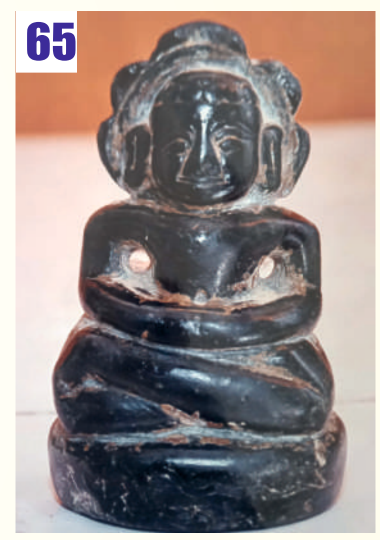
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

66
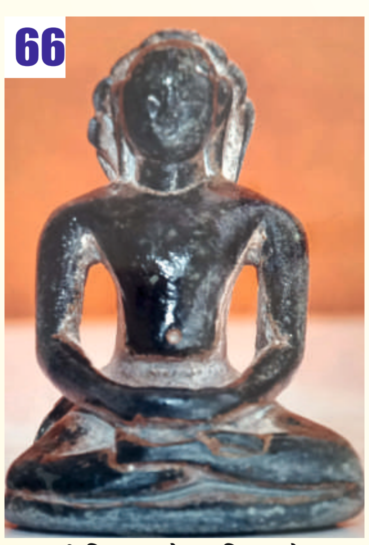
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

67

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

68

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

69

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

70

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

71
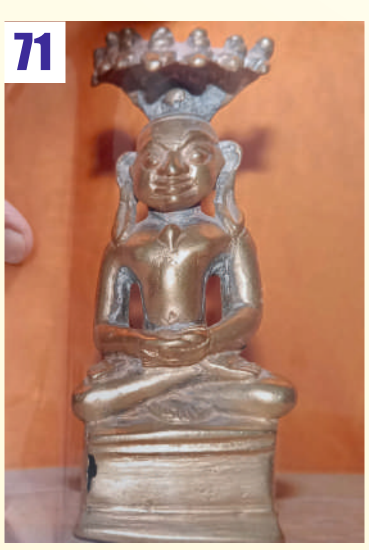
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

72

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

73

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
बजरंगगढ़ जिला गुना (म.प्र.)

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर महाराष्ट्र

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर

रवि योग 2025

✻ जनवरी 2025 ✻

02 जन. 23/10 बजे से 31/08 बजे तक ।
03 जन. 07/08 बजे से 22/22 बजे तक ।
4 जन. 21/23 बजे से 5 जन. 20/18 बजे तक।
7 जन. 17/50 बजे से 9 जन. 15/07 बजे तक।
12 जन. 11/24 बजे से 13 जन. 10/38 बजे तक।
19 जन. 17/30 बजे से 20 जन. 20/30 बजे तक।
31 जन. 28/14 बजे से 31/06 बजे तक ।

✻ फरवरी 2025 ✻

01 फर. 07/06 बजे से 26/33 बजे तक ।
2 फर. 24/52 बजे से 3 फर. 23/16 बजे तक।
5 फर. 20/33 बजे से 6 फर. 07/58 बजे तक।
6 फर. 19/29 बजे से 8 फर. 18/07 बजे तक।
10 फर. 18/01 बजे से 11 फर.18/34 बजे तक।
18 फर. 07/35 बजे से 19 फर. 10/40 बजे तक।
19 फर. 12/34 बजे से 20 फर. 13/30 बजे तक।

✻ मार्च 2025 ✻

2 मार्च 08/59 बजे से 30/39 बजे तक ।
3 मार्च 28/29 बजे से 4 मार्च 18/49 बजे तक।
4 मार्च 26/37 बजे से 5 मार्च 25/08 बजे तक।
7 मार्च 23/32 बजे से 9 मार्च 23/55 बजे तक।
11 मार्च 26/15 बजे से 12 मार्च 28/05 बजे तक।
20 मार्च 23/31 बजे से 21 मार्च 25/46 बजे तक।
31 मार्च 13/45 बजे से 14/08 बजे तक ।

✻ अप्रैल 2025 ✻

1 अप्रैल 11/06 बजे से 2 अप्रैल 08/49 बजे तक।
3 अप्रैल 07/02 बजे से 29/51 बजे तक ।
5 अप्रैल 29/32 बजे से 8 अप्रैल 07/55 बजे तक।
10 अप्रैल 12/24 बजेसे 11 अप्रैल 15/10 बजेतक।
19 अप्रैल 10/21 बजेसे 20 अप्रैल 11/48 बजेतक।
30 अप्रैल 16/18 बजेसे 29/54 बजेतक।

✻ मई 2025 ✻

1 मई 05/54 बजे से 14/21 बजे तक ।
2 मई 13/04 बजे से 3 मई 12/34 बजे तक ।
5 मई 14/01 बजे से 7 मई 18/17 बजे तक ।
9 मई 24/14 बजे से 10 मई 27/15 बजे तक ।
11 मई 13/27 बजे से 12 मई 06/17 बजे तक ।
18 मई 18/52 बजे से 19 मई 19/29 बजे तक ।
29 मई 22/38 बजे से 30 मई 21/29 बजे तक ।
31 मई 21/07 बजे से 29/41 बजे तक ।

✻ जून 2025✻

01 जून 05/41 बजे से 21/36 बजे तक ।
03 जून 24/58 बजे से 6 जून 06/34 बजे तक।
9 जून 15/31 बजे से 10 जून 18/02 बजे तक।
16 जून 25/13 बजे से 17 जून 25/01 बजे तक।
28 जून 06/35 बजे से 29 जून 06/34 बजे तक।
30 जून 07/20 बजे से 29/45 बजे तक ।

✻ जुलाई 2025 ✻

01 जुला. 05/45 बजे से 08/54 बजे तक ।
03 जुला. 13/50 बजेसे 05 जुला. 19/51 बजेतक।
06 जुला. 05/56 बजे से 22/42 बजे तक ।
8 जुला. 27/15 बजेसे 09 जुला. 28/50 बजेतक।
15 जुला. 29/46 बजेसे 16 जुला. 28/50 बजेतक।
27 जुला. 16/23 बजेसे 28 जुला.17/35 बजेतक।
29 जुला. 19/27 बजेसे 30 जुला.21/53 बजेतक।

✻ अगस्त 2025 ✻

01 अग. 27/40 बजे से 2 अग. 28/16 बजे तक।
03 अग. 06/35 बजे से 5 अग. 11/23 बजे तक।
07 अग. 14/01 बजे से 8 अग. 14/28 बजे तक।
14 अग. 09/06 बजे से 15 अग. 07/36 बजे तक।
25 अग. 27/49 बजे से 26 अग.30/04 बजे तक।
28 अग. 08/43 बजे से 29 अग.11/38 बजे तक।

✻ सितम्बर 2025 ✻

01 सित. 19/05 बजे से 3 सित.23/08 बजे तक।
05 सित. 23/38 बजे से 06 सित. 22/55 बजे तक।
12 सित. 11/58 बजे से 13 सित. 10/11 बजे तक।
13 सित. 15/49 बजे से 14 सित. 08/41 बजे तक।
24 सित. 16/16 बजे से 25 सित. 19/09 बजे तक।
26 सित. 22/09 बजे से 27 सित. 07/15 बजे तक।
27 सित. 25/08 बजे से 27 सित. 27/55 बजे तक।

✻ अक्टूबर 2025 ✻

1 अक्टू. 08/06 बजे से 3 अक्टू.09/34 बजे तक।
5 अक्टू. 08/01 बजे से 30/16 बजे तक ।
12 अक्टू. 13/36 बजे से 13 अक्टू. 12/26 बजे तक।
23 अक्टू. 28/51 बजे से 24 अक्टू.06/48 बजे तक।
25 अक्टू. 07/51 बजे से 26 अक्टू. 10/46 बजे तक।
27 अक्टू. 13/27 बजे से 28 अक्टू. 15/45 बजे तक।
30 अक्टू. 18/33 बजे से 31 अक्टू. 30/31 बजे तक।

✻ नवम्बर 2025 ✻

1 नव. 06/31 बजे से 18/20 बजे तक ।
3 नव. 15/05 बजे से 4 नव. 12/34 बजे तक ।
10 नव. 18/48 बजे से 11 नव. 18/17 बजे तक।
23 नव. 19/28 बजे से 24 नव. 21/53 बजे तक।
25 नव. 23/57 बजे से 26 नव. 25/33 बजे तक।
28 नव. 26/49 बजे से 30 नव. 25/11 बजे तक।

✻ दिसम्बर 2025 ✻

02 दिस. 20/51 बजे से 25/22 बजे तक ।
03 दिस. 17/59 बजे से 4 दिस. 14/54 बजे तक।
09 दिस. 26/22 बजे से 10 दिस. 26/44 बजे तक।
22 दिस. 29/32 बजे से 24 दिस. 07/07 बजे तक।
25 दिस. 08/43 बजे से 30/36 बजे तक ।
29 दिस. 07/41 बजे से 30 दिस. 27/58 बजे तक।

सम्पादकीय

संसार रूपी समुद्र से पार करने वाले नाव या घाट को तीर्थ कहते है। और जो संसार रूपी समुद्र से पार करने का काम करता है वह तीर्थ कहलाता है। ऐसे तीर्थों में भगवान पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें दृष्टिगोचर होती है। उनमें से एक अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर में अद्भुत प्रतिमा हैं। जिनका आश्चर्य है कि हवा में यह प्रतिमा आचार्य कुंदकुंद के समय से रही है।

इस प्रतिमा का स्वरूप बदलने के लिये श्वेताबंरीय पक्ष में सदैव प्रयास किया है। और इसके श्वेतांबरी करण करने का मुख्य पक्ष श्वेतांबर पंथ की प्राचीन सिद्ध करना एवं सवस्त्र मुक्ति के मार्ग को प्राचीन एवं मौलिक सिद्ध करना किंतु हमारे प्राचीन आचार्यो ने इस तीर्थ को दिगंबरीय सिद्ध किया है। ऐसे निर्विवाद सत्य पर विवाद का कहर आना निर्विवाद मोक्ष के मार्ग को वादित करने के सिवा और कुछ नहीं है। प्रस्तुत अंक में भगवान पार्श्वनाथ की अतिशय और अद्भुत प्रतिमाओं का जहां पर उल्लेख किया गया है वहीं शिरपुर की मौलिकता एवं मूल दिगम्बर स्वरूप को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

श्वेतांबरीय छल कपट एवं झूठ फरेब से पर्दा उठाने का प्रयास किया गया है। जिसे पढ़कर पाठक स्वयं निर्णय कर सकती है।

प्रस्तुत पंचाग के निर्माण में पं.श्री लक्ष्मीदत्त मिश्र रहली, पं. सनतकुमार विनोद कुमार रजवांस की असीम विद्वतता का सहयोग प्रदान हुआ है। एवं **दानवीर श्रेष्ठी श्रीमति माया गजेन्द्र जैन गिन्नी ग्रुप इन्दौर** ने अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर जैन ज्योतिष विद्या पंचाग का प्रकाशन कराकर अद्वितीय कार्य सम्पन्न किया है। एतदर्थ हम उन्हें साधुवाद प्रदान करते हुये गौरवान्वित अनुभव कर रहे है। इस पंचाग की साज सज्जा कम्पोजिंग एवं मुद्रण व्यवस्था में **आशीष कुशवाह, अभिषेक रिंकु एवं आजाद जैन मोदी** प्रिन्टर्स ने जो अथक परिश्रमकिया है वे सभी धन्यवाद के पात्र है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पंचाग का सदुपयोग कर व्रत उपवास आदि तिथियों के निर्णय करने में सहयोगी बनेगा तथा धार्मिक क्रियाओं में श्रावकजनों को संलग्न करने में सहभागी होगा।

ब. जिनेश मलैया
प्रधान सम्पादक संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर-10
Mo:8989505108, 6232967108

संस्कार सागर पढ़े, संस्कार गढ़े, संस्कार सागर के सदस्य बने

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

संस्कार सागर

सदस्यता शुल्क

आजीवन	संरक्षक
2100/-	5100/-
परम सम्मानीय	परम संरक्षक
11000/-	15000/-

विज्ञापन शुल्क

रंगीन पूरा पेज	आधा पेज रंगीन
15000/-	8100/-

नई दिशा, नया चिंतन
नए प्रयासों का नया कदम।
संस्कार निर्माण का हर वर्ग का साथी,
संस्कार सागर है हरदम ॥

कार्यालय : संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास, ए.बी. रोड, इंदौर-10
फोन : 0731- 4003506, मो. 8989505108, 6232967108

दिशाशूल ले आओ वामें राहु योगिनी पीठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा मुहूर्त चक्र

नक्षत्र : अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा उत्तम है। रोहिणी, उत्तरषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा मध्यम है।
भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा निन्द्य हैं।
तिथि : 2/3/5/7/10/11/13

यात्रा के समय चन्द्र विचार

मेष, सिंह, धनु का पूर्व में। वृष, कन्या मकर का दक्षिण में। मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में। कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर में रहता है। सम्मुख चन्द्र में धन प्राप्ति, दाहिने चन्द्र में सुख, बाँये चन्द्र में धन हानि तथा पीठ पीछे चन्द्र कष्टकारक होता है।

योगिनी चक्र

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य
तिथा	9/1	3/11	13/5	12/4
	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
	14/6	15/7	10/2	30/8

दिशा शूल में नक्षत्र व तिथि विचार

पूर्व में सोम, शनि और ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रतिपदा और नवमी तिथियों को। पश्चिम को-रवि, शुक्र और रोहिणी नक्षत्र में 6.8 तिथियों को। उत्तर को- मंगल, बुध और उ.फा. नक्षत्र में 5,10 तिथियों को। दक्षिण को- गुरु और पूभा नक्षत्र में 5.13 तिथियों को यात्रा करना मना है। उसी दिन पहुँच जाने पर तथा आपत्तिकाल में दिशाशूल नहीं मानते हैं।

स्वर विचार

मनुष्य एक ही स्वर में साँस लेता व छोड़ता है। इनका क्रम घंटे-घंटे पर बदलता रहता है। दाहिने स्वर को सूर्य और बांये स्वर को चन्द्र कहते हैं। जब दोनों स्वर एक साथ चलें तो इसे सुषुम्ना स्वर कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रथम तीन तिथियों को दाहिना स्वर सूर्योदय के समय होना चाहिए। 3-3 तिथियों में 1-1 स्वर बदलने का प्रमाण है। जैसे कृष्ण पक्ष में एकम से तीज तक सूर्योदय के समय दाहिना स्वर रहेगा, तो चौथ से छठ तक सूर्योदय के समय दाहिना स्वर रहेगा, तो चौथे से छठ तक सूर्योदय के समय बॉया स्वर रहेगा, फिर साते से नवमी तक दाहिना स्वर रहेगा, दशमी से बारस तक बायां स्वर रहेगा, तेरस से अमावस तक दाहिना तक बायां स्वर रहेगा, तेरस से अमावस तक दाहिना स्वर रहेगा। यही क्रम बराबर चलता रहता है। इसमें उदया तिथि मानी जाती है। तिथि घटन पर दो दिन में और बढ़ने पर चार दिन में बदलता है। आपकी सुविधा के लिए जिस दिन बांया स्वर रहेगा, उन तारीखों के साथ (✻) लगाया गया है। स्वर की गड़बड़ी रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। स्वर गड़बड़ पर ठीक करें। विपरीत स्वर मिले तो मलमल के धुले हुए कपड़े की गोली बनाकर उस स्वर को बंद कर दें। इस क्रिया को 24 घंटे तक जारी रखें, यदि दूसरे दिन भी ठीक न चले तो क्रमशः 48 या 72 घंटे तक स्वर बंद रखें। गोली दो-दो घंटे में बदलते रहें। इन दिनों अधिक परिश्रम, नशा करने और दौड़ने से बचना चाहिए।

बांई करवट सोइये, जल बांये स्वर पीव।
दाहिने स्वर भोजन करें, तो सुख पावे जीव ॥1॥
दिन में चाले चन्द्रमा रात चलावें सूर।
तो निश्चय कर मानिये प्राण गमन अति दूर ॥2॥

1. प्रातः स्वर चलने वाली करवट से उठना चाहिए।
2. दाहिने स्वर में- शौच, स्नान, भोजन, मंत्र, आराधना, पत्र लिखना, विद्या अध्ययन, स्त्री प्रसंग, युद्ध में जाना पूर्व और उत्तर दिशा की यात्रा, सवारी खरीदना, दवाई खाना आदि कार्य कीजिए।
3. बायें स्वर में- स्थिर कार्य, विवाह, गुरु मंत्र, योगाभ्यास, खेती, दिव्य औषधि बनाना, बाग, सरोवर बनवाना, प्रीति, दक्षिण और पश्चिम दिशा में यात्रा, दूध, चाय, दवा, पानी आदि पेय पदार्थ लेंवे।
4. सुषुम्ना स्वर- यह स्वर स्वरों के बदलने के संधि काल तथा अन्त समय निकट होने, कोई विशिष्ट दुर्घटना या बुरा फल सम्भावित होने पर ही चलता है। ऐसे समय में केवल ईश्वर भजन करें।
5. स्त्री प्रसंग- पुरुष का दायाँ और स्त्री का बायाँ स्वर हो।
6. यात्रा विचार- पूर्व, उत्तर, ईशान और अग्निकोण की ओर दाहिने स्वर में। दक्षिण, पश्चिम, नैऋत्य और वायव्य कोण की ओर बायें स्वर में जाना चाहिये।
7. शरीर में किसी समय कोई कष्ट होने पर चलने वाले स्वर को बन्द कर दूसरा स्वर चलाने से कष्ट दूर होता है।
8. जो दिन में चन्द्र और रात में सूर्य स्वर चलाता है, वह दीर्घायु तथा विष टोना आदि के प्रभाव से मुक्त रहता है।
9. चैत्र शुक्ल 1 को सूर्योदय के समय स्वर का ध्यान रखें। स्वर गड़बड़ रहने से पूरा साल खराब जाने की संभावना रहती है।

नोट- स्वर संबंधी विशेष जानकारी के लिए आचार्य शुभचन्द्र प्रणीत ज्ञानार्णव ग्रंथराज में देखें।